प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण

का

द्विवर्षीय पाठ्यक्रम आधारित नोट्स

PRIMARY TEACHERS EDUCATION COLLEGE, GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

Year : 1st

Paper : I

Subject : ETS

Compiled & Edited by Mrs. Suman Minj

PRIMARY TEACHERS EDUCATION COLLEGE

Gurwa, P. O.- Sitagarha, Dist. – Hazaribag -825 303, Jharkhand, INDIA

(A Jesuit Christian Minority Institution)

Recognized by ERC, NCTE vide order No. BR-E/E- 2/96/2799(12) dt 11.02.1997

Phone No. 06546-222455, Email: ptecgurwa1997@rediffmail.com Website: www.ptecgurwa.org

इकाई – 2 और 3

शिक्षण शैली की नई अवधारणा
और
शिक्षा की विभिन्न अवधारणाएँ

PTEC GURWA, STAGARHA, HAZARIBAG

परम्परागत तथा क्रियाशीलन आधारित शिक्षा

डाल्टन विधि

डाल्टन विधि को ठेका विधि भी कहा जाता है । डाल्टन विधि की शुरूआत श्रीमती हेलेन पार्कहर्स्ट ने किया । हेलेन का जन्म अमेरिका के डाल्टन नगर में हुआ था । सन् 1919 से 1920 के बीच उसने इसी शहर में डाल्टन हाईस्कूल में अपनी पद्धति का श्री गणेश किया । इसलिए इस पद्धति को डाल्टन पद्धति कहा जाता है । इस पद्धति के मूल में बालक की स्वतंत्रता की विचारधारा काम कर रही है । यह पद्धति आज विश्व के लगभग सभी देशों में प्रचलित है ।

विद्यालय के छात्रों की रूचियों का ध्यान रखकर उनकी इच्छाओं का ख्याल रखते हुए प्रत्येक विद्यार्थी को ठेके के रूप में दिया जाता है । इस पद्धति में शिक्षा क्रम के प्रत्येक विषय के लिए अलग प्रयोगशाला रहती है । यह ठेका साप्ताहिक या मासिक अवधि का होता है । प्रत्येक विषय में तीसरे वर्ग से बारहवें वर्ग तक का प्रत्येक छात्र एक महीने का कार्य लता है । निर्धारित समय के अन्दर उसे कार्य पूरा कर लेना होता है । जो छात्र अपना कार्य पूरा कर लेता है उसे अन्य कार्य दिया जाता है । ये सभी कार्य छात्र विद्यालय की विभिन्न विषयों की प्रयोगशालाओं में करते हैं । इस प्रकार छात्र एक महीने में कार्य सम्पन्न कर लेता है । इसलिए इस विधि को ठेका विधि कहा जाता है । कार्य संपादन की विधि, उसके लिए आवश्यक सामग्रियाँ एवं सामग्रियों के प्रयोग के संबंध में शिक्षक, छात्रों को लिखित एवं स्पष्ट निर्देश देते हैं । इसी के अनुसार छात्र प्रयोगशाला में जाकर निर्धारित समय के अन्दर अपना कार्य पूरा करते हैं । शिक्षक, छात्रों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं ।

डाल्टन पद्धति के सिद्धांत

1. **बाल केन्द्रित शिक्षाः**– इस पद्धति में बालक की प्रधानता रहती है । वर्ग के कार्य विभाजन के अनुसार इस पद्धति में कार्य नहीं किया जाता । बालक स्वतंत्रता पूर्वक अपनी स्वाभाविक गति से काय करता है । फलस्वरूप उसकी वास्तविक और सुदृढ़ उन्नति होती है, क्योंकि वह उसके स्वयं के प्रयत्न और अध्ययन का फल है । बालकों की वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें कार्य करने का अवसर दिया जाता है ।
2. **प्रकृतिवाद (Naturalism)**

प्रकृतिवाद क्या है ?

अर्थः– प्रकृतिवाद एक ऐसी दार्शनिक विचारधारा है जो प्रकृति को मूल तत्त्व मानती है । यह आलौकि और पारलौकिक में विश्वास न करके प्रकृति को ही पूर्ण वास्तविक मानती है । प्रकृतिवादी प्रकृति को ही सबकुछ मानते हैं । इनके अनुसार, प्रकृति के अलावा कुछ भी सत्य नहीं है । प्रत्यक वस्तु प्रकृति से ही उत्पन्न होती है तथा पुनः उसी में विलीन हो जाती है । प्रकृतिवाद मन को मस्तिष्क की ही सहक्रिया मानते हुए शक्ति, गति, प्रकृति के नियमों तथा कार्यकारण संबंध के प्रेरक तथ्यों पर बल देता है । यह दर्शन शक्ति के संरक्षण तथा विकास के सिद्धान्त पर बल देता है । प्रकृतिवादी व्यक्ति को प्रकृति के निकट तथा इसके सम्पर्क में लाने की आवश्यकता पर बल देते हैं ।

प्रकृतिवाद शब्द विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है और इसलिए इसके अर्थ को स्पष्ट करना आसान नहीं है । इसके विषय में **रॉस** ने लिखा है, ''प्रकृतिवाद शब्द को एक परिभाषा देना कठिन है । यह तो कई अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है, जो प्रकृतिवाद के अतिरिक्त किसी अन्य तथ्य को यथार्थ नहीं मानती और न

PTEC GURWA, SITAGARHA, MADHUBANI

ही प्रकृति के परे एवं इन्द्रिय अनुभव के परे किसी अन्य तत्त्व का अस्तित्व ही स्वीकार करती है । इसी प्रकार इस विचारधारा के अनुसार प्रत्येक वस्तु प्रकृति से ही उत्पन्न होती है और इसी में विलीन हो जाती है ।''

वर्तमान युग में प्रकृतिवाद का स्थान भौतिकवाद ने लिया है । प्रकृतिवादी विचारक, पदार्थ, जीवन तथा मानसिक जगत की व्याख्या भौतिक एवं रासायनिक नियम के अनुसार करते हैं । वे ईश्वर की सत्ता, इच्छा की स्वतंत्रता और आत्मा की अमरता पर विश्वास नहीं करते । उनके अनुसार प्रकृति के ऊपर कोई शक्ति अथवा ईश्वर नहीं है । घटनाओं के संगठन में प्रकृति में अन्य किसी का हस्तक्षेप नही है । प्रकृतिवादियों का कहना है कि सभ्यता के विकास के फलस्वरूप मानव और प्रकृति का संबंध टूटता है । फलस्वरूप मानव दुःखी होता है। अतः मानव और प्रकृति का संबंध स्थापित किया जाना चाहिए ।

परिभाषाएँ

जेम्स वार्ड:– '' प्रकृतिवाद एक सिद्धांत है जो प्रकृति को ईश्वर से अलग करता है और आत्मा को पदार्थ के अधीन स्वीकार करता है तथा परिवर्तनशील नियमों को सर्वोच्च मानता है ।''

पैरी:– '' प्रकृतिवाद विज्ञान नहीं है वरन् विज्ञान के बारे में दावा है । अधिक स्पष्ट रूप से यह इस बात का दावा है कि वैज्ञानिक ज्ञान अन्तिम है जिसमें विज्ञान से बाहर दार्शनिक ज्ञान का कोई आधार नहीं है ।''

ज्वायस:– '' प्रकृतिवाद वह विचारधारा है जिसकी प्रमुख विशेषता आध्यात्मिकता को अस्वीकार करना है। यह प्रकृति एवं मनुष्य के दार्शनिक चिन्तन में उन बातों को ध्यान देना है जो हमारे अनुभवों से परे हों ।''

थामस और लैंग:– '' प्रकृतिवाद आदर्शवाद के विपरीत मस्तिष्क को पदार्थ के अधीन मानता है और यह विश्वास करता है कि अन्तिम वास्तविकता भौतिक है, आध्यात्मिकता भौतिक नहीं ।''

विशेषताएँ

1. **प्रकृति की ओर लौटो**– प्रकृतिवाद का नारा है ''**प्रकृति की ओर लौटो**'' । इस विचारधारा ने प्रकृति, मनुष्य तथा वस्तुओं में प्रकृति को सर्वोच्च स्थान दिया है । इसके अनुसार बालक की महान शिक्षिका प्रकृति ही है । अतः बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित होने के लिए प्राकृतिक वातावरण प्रस्तुत करना चाहिए । **रूसो** ने प्रचलित पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाई थी और प्रकृति की ओर लौटने का नारा दिया । उसका विश्वास था कि सामाजिक संस्थाओं में आने के बाद मानव जीवन पूर्णतः कृत्रिम हो जाता है । उसके अनुसार प्रकृति के निर्माता के हाथों में सभी वस्तुएँ अच्छे रूप में मिलती हैं । परन्तु मानव के सम्पर्क में आते ही वे सब दूषित हो जाती हैं ।
2. **पुस्तकीय ज्ञान का विरोध**– प्रकृतिवादी शिक्षा का जन्म उस प्रचलित शिक्षा के विरोध में हुआ था जिसमें पुस्तकीय ज्ञान को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया था । लैटिन में लिखी हुई पुस्तकों को रट लेना ही शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य था । इस शिक्षा में समय का पर्याप्त अपव्यय होता था और मस्तिष्क पर अनावश्यक जोर डालना पड़ता था । साथ ही बालकों की इसमें कोई रूचि नहीं होती थी । अतः प्रकृतिवाद ने ऐसी पुस्तकीय ज्ञान का विरोध किया ।
3. **बालकों में प्रधानता**– प्रकृतिवादियों ने शिक्षा प्रक्रिया में बालक का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है । उन्होंने बाल केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया है । उनके अनुसार बालक की शिक्षा व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए कि बालक अपनी प्रकृति अर्थात्

PTEC GURWA, GIRIDIH, HAZARIBAG

जन्मजात शक्तियों, रूचियों, क्षमताओं को अपनी इच्छा के अनुसार विभिन्न कार्यों में भाग लेकर बिना किसी मार्गदर्शन के विकास कर सके ।

4. **शिक्षा में बाल मनोविज्ञान– रूसो** का कथन है कि प्रत्येक बालक एक पुस्तक है और हमें उसके प्रत्येक पृष्ठ को समझना चाहिए । इस प्रकार उसमें शिक्षा में बाल प्रकृति के अध्ययन का प्रतिपादन किया । प्रकृतिवादियों ने कहा है कि प्रत्येक बालक के मूल प्रवृत्तियों, संवेगों, स्थायी भावों, बौद्धिक शक्तियों तथा व्यक्तित्व को समझना चाहिए और उसी के हिसाब से उसकी शिक्षा व्यवस्था करनी चाहिए । बच्चों की प्रत्येक अवस्था शैशवास्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था सभी में प्रकृतिक शक्तियो का विकास अलग–अलग रखा है । इसलिए शिक्षकों को इसका पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है ।
5. **बालकों के विकास के लिए स्वतंत्रता आवश्यक**– प्रकृतिवादियों का विचार है कि बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है । प्रकृतिवादी विश्वास करते हैं कि प्रकृति ठीक समय पर अपना कार्य करती है । अतः बालकों को अपनी रूचि के अनुसार कार्य करने का अवसर देना चाहिए । बालक जन्म से अच्छा होता है और अच्छा ही रहता है । आवश्यकता इस बात की है उन्हें अपने स्वाभाविक विकास के लिए स्वतंत्रता प्रदान की जाए ।
6. **इन्द्रिय प्रशिक्षण का महत्त्व– रूसो** का कहना है कि बालकों के ज्ञान का द्वार इन्द्रियों का उचित प्रयोग करके खोलना चाहिए । प्रकृतिवादी इन्द्रियों के प्रशिक्षण को विशेष महत्त्व देते हैं । उनके अनुसार इन्द्रियाँ ज्ञान के द्वार हैं । वहीं शिक्षा स्थायी होती हैं जो इन्द्रियों के उचित प्रयोग द्वारा प्राप्त होती है ।
7. **सहशिक्षा पर बल**– प्रकृतिवादी बालक–बालिकाओं के सहशिक्षा के समर्थक हैं । उनकी दृष्टि में सहशिक्षा से विद्यालय का वातावरण बाल प्रकृति की दृष्टि से अधिक स्वाभाविक और सहज रहता है । साथ ही बच्चों में अनावश्यक कुण्ठाओं, हीनग्रंथियों और दूषित मनोवृत्तियों को विकसित होन का अवसर प्राप्त नहीं होता ।

प्रकृतिवाद में शिक्षा के उद्देश्य

1. **उपयुक्त सहज क्रियाओं का निर्माणः**– प्रकृतिवादियों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मानव में ऐसी सहज संबंध क्रियाओं का निर्माण करना है जो उसके वर्तमान जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध हो अर्थात् शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में इस प्रकार के विचारों, क्रियाओं और आदतों का निर्माण करना है । जो उसे उचित समय पर सहायता प्रदान करे, जिस प्रकार यंत्र के पुर्जे कार्य करते हैं । शिक्षण का कार्य व्यक्ति में इस प्रकार के व्यवहार में विकास करना है जिससे कि वह मशीन की तरह कुशलता पूर्वक काय करता रहा ।
2. **मूल प्रवृत्तियों का शोधन, दिशान्तरण और समन्वयः**– कुछ प्रकृतिवादी विचारक सुखदायी उद्देश्य का विरोध करते हैं । उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के योग्य बनाना है जो प्रकृति ने उसके सम्मुख रखे हैं और जिनका वैयक्तिक और सामाजिक मूल्य है । **रॉस** ने इसके विषय में स्पष्ट करते हुए लिखा है कि शिक्षा का उद्देश्य सहज प्रवृत्तियों, ऊर्जाओं का शोधन, सहज आवेगों का दिशान्तरण, समन्वय और तालमेल करना है ।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

3. **<u>जीवन को संघर्ष के योग्य बनानाः</u>**– इसमें प्रकृतिवादियों ने कहा है कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को निरन्तर संघर्ष के योग्य बनाना है । उनका कहना था कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए निरन्तर संघर्ष करना पड़ता है और विजय वही होते हैं जो निरन्तर संघर्ष करने के लिए तत्पर रहते हैं । अतः शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को अपने वातावरण से अनुकूलन करने योग्य बनाना है ।
4. **<u>आत्मसंरक्षण और आत्मसंतोष की प्राप्तिः</u>**– कुछ प्रकृतिवादी शिक्षा का उद्देश्य बालक में आत्मसंरक्षण और आत्मसंतोष की भावना उत्पन्न करने में सहायता देना मानते हैं। इनका मानना है कि आत्मसंतोष मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ गुण है । अतः बालक में आत्मसंतोष की भावना उत्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है ।
5. **<u>पराजातीय एकता की प्राप्तिः</u>**– शिक्षा का उद्देश्य जातीय कारकों, लाभों को प्राप्त करना, सुरक्षित करना और हस्तांतरित करना है । उनके अनुसार शिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी उन जातिय प्राणियो के संरक्षण, आगे आने वालों को सोंपने और उन्हें विकसित करने का नाम ही शिक्षा है ।
6. **<u>वैयक्तिकता का स्वतंत्र विकासः</u>**– प्रकृतिवादियों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालकों में जन्म से निहित शक्तियों का स्वतंत्र विकास करने में सहायता प्रदान करना है । दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि प्रकृतिवादी शिक्षा का मूल व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है ।

<u>प्रकृतिवाद एवं शिक्षण विधियाँ</u>

1. **<u>करके सीखनाः</u>**– प्रकृतिवादी करके सीखन पर विशेष बल देते हैं । उनके अनुसार, बालक स्वयं कुछ करके सीख सकते हैं । प्रकृतिवाद करके सीखने को उत्तम समझता है तथा पुस्तकीय ज्ञान का विरोध करता है । इस विचारधारा के अनुसार जो ज्ञान दिया जाता है वह कृत्रिम होता है । अतः प्रकृतिवाद पुस्तकों पर निर्भर रहने की अपेक्षा छात्रों को वास्तविक जीवन की क्रियात्मकता पर ज्यादा बल देते हैं।
2. **<u>स्वानुभव द्वारा सीखनाः</u>**– प्रकृतिवाद स्वानुभव द्वारा सीखने पर महत्त्व देते हैं । इस संबंध में **रूसो** कहते हैं, ''अपने विद्यार्थी को शाब्दिक पाठ मत पढ़ाओ बल्कि उसे वास्तविक अनुभव के साथ पढ़ने दो ।'' विद्यार्थी के ऊपर बाह्य ज्ञान को थोपे जाने का वे विरोध करते हैं । वे कहते हैं कि बच्चों को उनकी रूचि, क्षमता तथा योग्यतानुसार सीखने का अवसर देना चाहिए ।
3. **<u>प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा सीखनाः</u>**– प्रकृतिवादियों का कहना है कि बालकों को सामाजिक जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव का अवसर प्रदान करना चाहिए। बालकों को नागरिक के अधिकार और कर्त्तव्य नहीं बतलाना चाहिए बल्कि उन्हें प्राकृतिक समाज के रूप में संगठित करके सीखना चाहिए ।
4. **<u>खेल द्वारा सीखनाः</u>**– प्रकृतिवादी खेल द्वारा शिक्षा को सबसे अधिक उत्तम समझते हैं औरउनका कहना है कि बालकों को खेल द्वारा ही उचित शिक्षा दी जा सकती है । खेल में स्वतंत्रता का भाव होता है, जो रूचि के अनुसार खेला जाता है और मन को आनन्दित करता है । प्रकृतिवाद के अनुसार यदि खेल के द्वारा किसी चीज को सीखा

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

जाए तो उसमें औपचारिकताएँ नहीं होती हैं । अतः खेल एक स्वाभाविक रूप है जिसमें कृत्रिमता का अभाव पाया जाता है ।

प्रकृतिवाद के गुण

1. प्रकृतिवाद ने शिक्षा और ज्ञान की सभी शाखाओ में बहुत गहरा प्रभाव डाला है ।
2. आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान और समाजशास्त्र प्रकृतिवादी हैं ।
3. प्रकृतिवाद ने इस सिद्धांत को जन्म दिया है कि मनोविज्ञान की प्रगति पूर्ण रूप से निरीक्षणात्मक और वस्तुपरक विधियों पर निर्भर है ।
4. व्यवहारवाद का जन्म प्रकृतिवाद से माना जाता ह ।
5. समाज और समाजशास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन का जन्म प्रकृतिवाद से हुआ है ।
6. शिक्षा का आधार और मानसिक परीक्षण प्रकृतिवादी हैं ।
7. प्रकृतिवाद ने शिक्षा को वैज्ञानिक और जैविकीय दृष्टिकोण दिये हैं । आज शिक्षा में इसके कारण नीवन प्रवृत्तियों का विकास हुआ है ।

दोष

1. प्रकृतिवादी शिक्षा के उद्देश्य संतोषजनक नहीं हैं ।
2. प्रकृतिवादी बालक के केवल वर्तमान जीवन को महत्त्व देते हैं और उनके भावी जीवन की ओर ध्यान नहीं देते ।
3. प्रकृतिवाद आत्मा, परात्मा और आध्यात्मिकता को महत्त्व नहीं देता, केवल पदार्थ को सबकुछ मानता है । बिना आध्यात्मिकता एवं नैतिकता के मनुष्य पशु के जैसा हो जाता है ।
4. प्रकृतिवाद समाज का कृत्रिमकता का कारण और बुराईयों का जड़ मानता है ।
5. प्रकृतिवाद पुस्तकीय शिक्षा, औपचारिक शिक्षा का विरोध करता है लेकिन यह भूल जाता है कि अव्यवस्थित और असंगठित एवं बिना योजना के किसी लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है ।
6. प्रकृतिवाद दर्शन में प्रकृति दण्ड को भी महत्त्व दिया जाता है जो बालकों के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकती है ।
7. प्रकृतिवाद में उच्च शैक्षिक उद्देश्यों का अभाव पाया जाता है और उद्देश्यहीन शिक्षा ।
8. प्रकृतिवाद शिक्षक को गौण स्थान देकर उसकी उपेक्षा करता है जबकि शिक्षक के दिशा एवं प्रेरणा के बिना छात्र कुछ भी करने में असमर्थ होते हैं ।
9. प्रकृतिवादी संस्कृति, शाश्वत मूल्य, चरित्र, नैतिकता, अच्छी आदतों, सामाजिक नियमों आदि में विश्वास नहीं करते, जबकि इसके बिना मनुष्य अपने को मनुष्य के रूप म नहीं ढाल सकता । यदि ये मूल्य न हों तो समाज की व्यवस्था संचालित नहीं हो सकती है । इस दृष्टि से प्रकृतिवादी दर्शन अव्यवहारिक एवं अमानवीय कहा गया है ।

प्रकृतिवाद का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव

प्रकृतिवादी विचारधारा में शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है । शिक्षा संबंधी विचारों से शिक्षा में रूढ़िवादिता कम हुई है । **रूसो** की प्रसिद्ध पुस्तक **एमिल** ने शिक्षा के इतिहास में एक नवीन युग को आरंभ किया । अतः बालक की शिक्षा में प्रमुख स्थान दिया जाने लगा । अनुभव तथा करके सीखो, स्वतंत्र अनुशासन, आत्मअभिव्यक्ति आदि पर बल दिया जाने लगा है ।

PTEC GURWA, SAGARHA, HAZARIBAG

प्रकृतिवाद के प्रभाव को हम इस प्रकार लिख सकते हैंः–

1. प्रकृतिवाद ने अनेक रूपों में शिक्षा जगत् को प्रभावित किया है । प्रकृतिवादी शिक्षा के अनुसार, व्यक्ति की प्रत्यक क्रिया के लिए एक प्रकार का उत्तेजन चाहिए । व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों का उन्नयन और समन्वय होना चाहिए और व्यक्ति इस योग्य बन सके कि वह अपने वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित कर सके ।
2. आज शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियों और शिक्षा विधियों का जो विकास हो रहा है वह प्रकृतिवादी विचारधारा की देना है । आज अधिकतर शिक्षा शास्त्री प्रकृतिवादी हैं ।
3. आज शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रकृति का प्रचार बढ़ रहा जिसके फलस्वरूप बाल मनोविज्ञान, शिक्षामनोविज्ञान आदि का विकास हुआ है । प्रकृतिवादी दर्शन के परिणाम स्वरूप ही इस प्रवृत्ति का प्रचार हो सका है ।
4. आज शिक्षा में इन्द्रिय प्रशिक्षण, सर्वशिक्षा, स्वा–अनुशासन, पाठ्यक्रम, सहभागी क्रियाशीलन आदि का प्रयोग हो रहा है । यह सब प्रकृतिवादी दर्शन के परिणाम स्वरूप हुआ ।
5. आज शिक्षा में स्वतंत्रता आदि की भावना विकसित की जा रही है । यह भी प्रकृतिवादी शिक्षा के लिए है । अनुशासन के क्षेत्र में प्रकृतिवादी दर्शन ने नवीन क्रांति का सूत्रपात किया ।

आदर्शवाद (Idealism)

अर्थ:– आदर्शवाद अंग्रजी के शब्द Idealism का हिन्दी रूपान्तरण है । Idealism शब्द की उत्पति **प्लेटो** के आध्यात्मिक सिद्धांत से हुई है । उनका सिद्धांत था कि अन्तिम वास्तविकता, विचारों अथवा विचारवाद में है। उच्चारण की सुविधा के लिए Idealism शब्द में (L) जोड़ दिया गया है । इस प्रकार, Idealism शब्द का हिन्दी में आदर्शवाद या विचारवाद कहा गया है ।

आदर्शवाद मन को प्रकृति की वास्तविकता मानता है । आदर्शवादी के विचारों के अनुसार जो तथ्य सत्य या वास्तविक है वह अवश्य ही आध्यात्मिक व मानसिक है । भौतिक संसार मन के अभिव्यक्ति का साकार रूप मात्र है । आदर्शवादी भौतिक चिन्तन की अपेक्षा मानसिक चिन्तन को अधिक महत्त्व प्रदान करते है । इसके विषय में **सुकरात** ने स्पष्ट कहा है, ''भौतिक चिन्तन से हमें कोई वास्ता नहीं है, मन ही मनुष्य के चिन्तन का वास्तविक विषय है ।''

आदर्शवाद की परिभाषाएँ

बूबेकर:–'' आदर्शवादियों का कहना है कि संस्कार को समझने के लिए मन सर्वोपरि है । उनके लिए इससे अधिक वास्तविक कोई बात नहीं है, कि मन संसार को समझने में लगा रहे और किसी बात को इससे अधिक वास्तविकता नहीं दी जा सकती है क्योंकि किसी और बात को मन से अधिक वास्तविकता समझना स्वयं मन की कल्पना होगी ।''

हैण्डरसनः– '' आदर्शवाद मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष पर बल देता है । इसका कारण यह है कि आध्यात्मिक मूल्य मनुष्य और जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू हैं । आदर्शवादियों का विश्वास है कि मनुष्य अपने सीमित मन को असीमित मन से प्राप्त करता है । वे यह मानते हैं

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

कि व्यक्ति और संसार दोनों बुद्धि की अभिव्यक्तियाँ हैं । वे कहते हैं कि भौतिक संसार की व्याख्या मन से ही की जा सकती है ।''

रस्कः– '' आदर्शवाद वैयक्तिक और वस्तुगत दोनों है । यह वैज्ञानिक खोज की स्वतंत्रता को तो स्वीकार करता है पर भौतिक जगत को वास्तविकता की अपूर्ण अभिव्यक्ति मानता है। इसको पूरा करने के लिए आध्यात्मिकता की आवश्यकता है । यह मनुष्य की प्रकृति की विशिष्टता पर बल देकर मानव जीवन को सम्मान देता है, यह विश्वास करता है कि मनुष्य में ऐसी तार्किक, नैतिक और सौन्दर्यत्मक शक्तियाँ है जो किसी जीवधारी में नहीं है। यह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है ।

आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य

1. **आत्मज्ञान की प्राप्तिः**– आदर्शवादियों का विश्वास है कि वास्तविकता की स्थिति, आध्यात्मिकता में ही है और कुछ विचार या आदर बालकों में प्रबल रूप से विद्यमान रहते हैं । ये विचार अथवा आदर्श बालक में प्रारंभ से ही व्यवस्थित रहते हैं, क्योंकि बालक का मन परात्मा का ही एक अंग है । अतः शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व को ऊँचा उठाना या व्यक्ति के अन्दर सर्वोच्च शक्तियों को वास्तविक बनाना है । आदर्शवाद ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है । यही कारण है कि यह व्यक्तित्व के उत्कर्ष को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य घोषित करता है । अर्थात् स्वयं में सर्वोच्च शक्तियाँ या क्षमता की प्राप्ति व्यक्तित्व में ही होती हैं । अतः शिक्षा का उद्देश्य उनका पूर्ण विकास करके वैयक्तिक का पूर्ण विकास करना है ।
2. **सांस्कृतिक सुरक्षाः**– आदर्शवाद के अनुसार, शिक्षा का दूसरा उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत की संवृद्धि है । आदर्शवाद मनुष्य की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत पर बहुत बल देता है । मनुष्य ने इन्हें अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा प्राप्त किया है । और मनुष्य की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत की वृद्धि धीरे–धीरे हुई है । अतः शिक्षा का उद्देश्य होनी चाहिए मनुष्य को अपनी आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा इन्हें समृद्ध बनाना ।
3. **सृजनात्मक शक्तियों का विकासः**– आदर्शवादियों की यह धारणा है कि प्रत्येक मनुष्य में सृजनात्मक शक्तियाँ बीज के रूप में निहित रहती हैं । जो उपयुक्त वातावरण पाकर विकसित हो उठती हैं । अतः शिक्षा का उद्देश्य इन शक्तियों को विकास के लिए प्रेरित करना है । मनुष्य के पास बुद्धि उसकी एक बड़ी विलक्षण शक्ति है, जिसके सहारे वह वातावरण को अपने अनुकूल बना देता है । स्वयं वातावरण का दास होकर नहीं रहता है । इस प्रकार शिक्षा मानव व्यक्तित्व के उन्नयन का प्रबल साधन है ।
4. **आध्यात्मिक जगत का विस्तारः**– आदर्शवाद के अनुसार मानव जीवन का प्रमुख लक्ष्य सत्यं शिवं सुन्दरम् की प्राप्ति है । अतः शिक्षा इस तरह की होनी चाहिए जो मनुष्य को इन मूल्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करे । अतः शिक्षा में उन तत्त्वों का समावेश हो जो बच्चों के भौतिक विकास की अपेक्षा उनके आध्यात्मिक विकास म सहायक हो ।
5. **विवके शक्ति का विकास करनाः**– आदर्शवादी विचारक संसार को विकास की प्रक्रिया मानते हैं। आदर्शवादी उन नियमों की खोज करते हैं जो भौतिक मूल्यों पर आधारित हैं और संसार का संचालन करते हैं । आदर्शवादी सबसे अधिक महत्त्व विवेक शक्ति के विकास का देते हैं । उनके अनुसार तर्क एवं बुद्धि से विवेकशील विकसित होती है ।

PTEC GURWA, ST AGARIA, HAZARIBAG

और यही विवेक आत्मा का ज्ञान कराता है । इसी शक्ति द्वारा मनुष्य ईश्वरीय संसार में प्रवेश करता है । अतः शिक्षा द्वारा इसका विकास आवश्यक है और इसी के द्वारा सत्य की खोज होती है । अतः शिक्षा का उद्देश्य बौद्धिक शक्ति का विकास करना ही नहीं बल्कि उस बौद्धिक शक्ति के द्वारा उसे सत्य की खोज में लगाना है । जिससे उसे सत्यम् की अनुभूति हो और वह अंधेरे में नहीं बल्कि प्रकाश में रहे ।

6. **<u>पवित्र जीवन की प्राप्तिः</u>**– कुछ आदर्शवादी विचारकों के अनुसार, शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य पवित्र जीवन की प्राप्ति है । **फ्रोबेल** ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है – ''शिक्षा का उद्देश्य भक्तिपूर्ण, पवित्र तथा कलंक रहित जीवन की प्राप्ति है। शिक्षा को मनुष्य का पथ–प्रदर्शन इस प्रकार करना चाहिए कि उसमें अपने और प्रकृति का सामना करने और ईश्वर से एकता स्थापित करने का स्पष्ट ज्ञान हो जाए ।''
7. **<u>परम तत्त्व से एक आकारः</u>**– कुछ आदर्शवादी शिक्षा का उद्देश्य परम तत्त्व या ईश्वर से एकाकार कराना मानते हैं । संसार की विभिन्न वस्तुओं में अद्वितीय एकता के दर्शन होते हैं । शिक्षा मनुष्य के इस दैनिक एकता का आभास कराती है और उसमें दैविक शक्ति से एकाकार करने के क्षमता उत्पन्न करती है । **फ्रोबल** का विचार है इस विश्व में जितनी भी वस्तुएँ है उन सब में एक दैविक शक्ति होती है । यह एकता ही परमात्मा है । शिक्षा मनुष्य को इस बात के लिए प्रेरित एवं पथ–प्रदर्शन करती है कि उसमें और प्रकृति की विभिन्न वस्तुओं में जो शाश्वत् व्याप्त है उस शक्ति को समझ कर उसके साथ एकाकार कर ले ।

<u>आदर्शवादी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका</u>

आदर्शवादी शिक्षा में शिक्षक को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है । इसके अनुसार बालक की शिक्षा पूर्णतया शिक्षक पर ही निर्भर करती है । यदि शिक्षक योग्य, अनुभवी और कर्त्तव्यनिष्ठ है तो अवश्य ही बालक भी वैसा ही बनेंगे । इसके लिए शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और इसमें निम्न बातें कही गई हैं:–

1. **<u>मानसिक पूर्णता के लिए शिक्षक की आवश्यकता</u>**– आदर्शवादी शिक्षण को द्विमुखी प्रक्रिया मानते हैं । उनके अनुसार जितना महत्त्व विद्यार्थी का है उतना ही महत्त्व शिक्षक का भी है । अतः आदर्शवादियों के अनुसार बालक की मानसिक पूर्णता के लिए शिक्षक का होना अत्यंत आवश्यक है ।
2. **<u>शिक्षक के सर्वांगीण विकास के लिए एक माली की भाँति शिक्षक की आवश्यकताः</u>**– बालक के व्यक्तित्व का विकास उचित एवं उपयुक्त शिक्षा में सही रीति से हो, इसके लिए शिक्षक को आवश्यकता है इस क्रम में **फ्रोबेल** ने बगीचे के रूप में शिक्षक के कार्य पर बहुत सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला है । उसने लिखा है कि विद्यालय एक बगीचा है और बालक छोटे–छोटे पौधे जिस प्रकार पौधा अपनी शक्ति और गुण से बढ़ता है उसी प्रकार बालकों का विकास भी अपनी शक्ति और गुण से होता है । किसी भी अच्छे उपवन का माली पौधों को मनमाने ढंग से बढ़ने नहीं देते उसे वह अच्छी तरह काट–छाँट देता है और गंदगी और असुन्दरता को हटाता है, जिससे कि बगीचे की शोभा बनी रहे । वह पौधों की देखभाल बड़े सावधानो से करता है । उन्हें हरा–भरा रखता है और सही दिशा में विकास करने का अवसर देता है ताकि वे सौन्दर्य और पूर्णता प्राप्त कर सकें । शिक्षक भी यही कार्य करते हैं। वे अपने हृदय के स्नेह से बालक के मन और बुद्धि को सींचते हैं और ऐसा प्रयत्न करते हैं कि बालक का विकास सही दिशा में हो ।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

3. **आत्मसाक्षरता के लिए शिक्षक की आवश्यकता:**– आदर्शवादी आत्मसाक्षरता के लिए भी शिक्षक के महत्त्व को भी स्वीकार करते हैं । शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक बालक में तो आत्मसाक्षात्कार की भावना उत्पन्न करता ही है साथ ही वह स्वयं के लिए भी आत्मसाक्षात्कार का मार्ग तैयार करना है । इसके विषय में **रॉस** ने लिखा है – शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के संबंध में विचार करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा की प्रक्रिया में विद्यार्थी की भाँति शिक्षक भी स्वयं अपनी मुक्ति का रास्ता बनाता है और वास्तव में दोनों ही एक–दूसरे के साथ संबंध स्थापित करके आत्मसाक्षरता की ओर बढ़ रहे हैं ।
4. **सामाजिक स्वभाव के अनुसार शिक्षक की आवश्यकता:**– आदर्शवादी यह विचार व्यक्त करते हैं कि मानव के सामाजिक स्वभाव के अनुसार भी शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की अधिक आवश्यकता है । जैसा कि **रस्क** ने भी लिखा है – मनुष्य के उच्च या आध्यात्मिक स्वभाव अनिवार्यतः सामाजिक है । चूँकि सामाजिकता मनुष्य के आध्यात्मिक तथा मानसिक तत्त्व का स्पष्टीकरण है। अतः यह विश्वव्यापी स्वभाव है । व्यक्ति अपनी पूर्णता को समाज के सदस्य के रूप में समाज की सांस्कृतिक सम्पत्ति में भाग लेकर ही कर सकता है । अतः मनुष्य का सामाजिक स्वभाव ही शिक्षक की आवश्यकता को व्यक्त करता है ।
5. **सत्य की प्रमाणिकता के लिए शिक्षक की आवश्यकता:**– विद्यार्थी जिस सत्य की प्राप्ति करता है वे विश्वासनीय या प्रमाणिक है या नहीं, इसे जानने के लिए भी शिक्षक की आवश्यकता होती है। प्रत्येक विद्यार्थी की बुद्धि इतनी परिपक्व नहीं होती है कि वे अपने द्वारा किए गए कार्य की जाँच भली–भाँति कर सकें । अतः शिक्षक का होना अति आवश्यक है ।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आदर्शवादी शिक्षक को बालक के वातावरण का एक अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण अंग मानते हैं । उनकी दृष्टि में शिक्षक सचेत, क्रियाशील और प्रभावशाली होता है । अतः बालक पर उनका प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता । बालक के मार्गदर्शक के रूप में उनका होना अति आवश्यक है । साथ ही यह विचारधारा स्वीकार करती है कि शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक बालक के लिए अनुकूल वातावरण का सृजन करता है जिसके बीच बालक आध्यात्मिक तत्त्वों को समझता और ग्रहण करता है ।

आदर्शवाद और शिक्षण विधियाँ

आदर्शवाद और शिक्षण के लक्ष्य स्पष्ट हैं किन्तु इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कोई निश्चित शिक्षण विधि नहीं है । इसलिए विभिन्न आदर्शवादी द्वारा विभिन्न शिक्षण विधियों को अपनाया गया है:–

1. **प्रश्नोत्तर विधि:**– प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात ने प्रश्नोत्तर विधि को अपनाया । वे इसी विधि द्वारा लोगों की शंकाओं का समाधान कर उन्हें शिक्षित किया करते थे ।
2. **संवाद विधि:**– **प्लेटो** ने इस विधि का अपनाया था ।
3. **आगमन और निगमन विधि:**– महान दार्शनिक **अरस्तु** ने इस विधि का प्रचलन किया।
4. **वाद–विवाद विधि:**– भारतीय एवं उच्च पाश्चात्य आदर्शवादी विचारों ने इस विधि का प्रयोग किया । इस विधि में बालक शिक्षा की पक्रिया में सदैव सक्रिय बना रहता है।
5. **व्याख्यान विधि:**– इस विधि के द्वारा बालक में सौन्दर्यनुभूति की भावना को जागृत करने का प्रयास किया जाता है । इस विधि का वर्तमान समय में अधिक प्रयोग होता है ।
6. **निर्देश विधि:**– महान दार्शनिक **हरबर्ट** ने निर्देशन विधि को अपनाया । उनके अनुसार निर्देशन के बिना शिक्षा की कोई धारणा नहीं है और किसी ऐसे निर्देश को स्वीकार नहीं करते जो शिक्षित नहीं करता है ।

PTEC GURWA, SITAPUR, HAZARIBAG

उपर्युक्त शिक्षण विधि के अतिरिक्त **फ्रोबेल** ने खेल द्वारा शिक्षा पर बल दिया । **पेस्टालॉजी** ने अभ्यास और पुनरावृत्ति को सर्वोत्तम शिक्षण विधि माना तथा कुछ दार्शनिक स्वाक्रिया विधि को मान्यता देते हैं ।

आदर्शवाद के गुण

1. आदर्शवाद बालक के आध्यात्मिक विकास पर बल देता है । और उसके अन्दर सत्यं शिवं सुन्दरं जैसे श्रेष्ठ गुणों का विकास करना चाहता ह । फलस्वरूप बालकों में उत्तम चरित्र का निर्माण होता है ।
2. आदर्शवादी शिक्षा के महान उद्देश्य होते हैं । इन उद्देश्यों की प्राप्ति बालक तथा समाज के लिए आवश्यक है । यह विचारधारा आत्मानुभूति के उद्देश्य पर बल देती है, जो प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त करना है । इस प्रकार यह दर्शन सर्वसाधारण के लिए शिक्षा का स्पष्ट समर्थन करता है ।
3. आदर्शवादी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक को अत्यन्त गौरवपूर्ण तथा महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है । शिक्षक अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से छात्रों का उचित मार्गदर्शन करता है । इस प्रकार शिक्षक–छात्र के बीच मधुर संबंध स्थापित होते हैं ।
4. आदर्शवाद बालक के व्यक्तित्व का आदर करता है तथा उसकी रचनात्मक शक्तियों पर बल देता है ।
5. आदर्शवादी विचारकों द्वारा प्रस्तुत विधियाँ मनोवैज्ञानिक तथा तर्कसंगत है ।
6. आदर्शवाद आत्मानुशासन तथा आत्मनियंत्रण के बातों का अनुपालन करता है जो शिक्षण जगत में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है ।

दोष

1. आदर्शवादी शिक्षा के उद्देश्य अमरण हैं । ये बालक को इस लोक के बजाय परलोक के लिए तैयार करते हैं । ये इतने महान हैं कि इनकी प्राप्ति कठिन प्रतीत होते हैं ।
2. आदर्शवादी विचारधारा जीवन के अंतिम लक्ष्य की ओर ले जाती ह । इसका वर्तमान जीवन से कोई संबंध नहीं है । यह हमारी आवश्यकता को पूरी नहीं करती है । अतः यह अव्यावहारिक है।
3. शिक्षण विधियों के क्षेत्र में आदर्शवाद का कोई विशेष योगदान नहीं है ।
4. आदर्शवाद शिक्षक को विशेष तथा बालक को गौण स्थान देता है । जो आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुकूल नहीं लगता ।
5. आदर्शवादी पाठ्यक्रम में उन विषयों को विशेष स्थान देते हैं जिनके आज के औद्योगिक युग में विशेष आवश्यकता नहीं जान पड़ता ।
6. आदर्शवाद विचार तथा मन पर अधिक बल देता है । इससे शिक्षा में बौद्धिकता को आवश्यकता से अधिक प्रोत्साहन मिलता है ।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आदर्शवाद में जहाँ गुण हैं वहीं दोष भी हैं । यदि इन दोषों के कारण हम आदर्शवाद को छोड़ देते हैं तो जीवन के आध्यात्मिक एवं शाश्वत् मूल्यों की प्राप्ति, आत्मानुभूति तथा आध्यात्मिक जगत के महत्त्व का कोई स्थान नहीं रहेगा । परिणाम स्वरूप इनको प्राप्त करके जो सुख और शान्ति नहीं मिलेगी । तथा जीवन कलापूर्ण और आसान हो जाएगा । आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य रोटी कमाने के चक्कर में प्रतिद्वंद्वता, कला, संघर्ष के जाल में फँसता जा रहा है । सभी ओर अशांति तथा अनिश्चितता का महौल है । ऐसे में आदर्शवाद ही जीवन का संतोष जनक आधार है ।

PTEC GURWA, SIAGARHA, HAZARIBAG

आदर्शवाद और प्रकृतिवाद में अन्तर

क्र.	प्रकृतिवाद	क्र.	आदर्शवाद
1	प्रकृतिवाद पदार्थ को महत्त्व देता है ।	1	आदर्शवाद मन एवं विचारों को महत्त्व देता है ।
2	प्रकृतिवाद सम्पूर्ण जगत का निर्माण पदार्थों एवं परमाणुओं से मानता है ।	2	आदर्शवाद जगत का निर्माण विचारों या प्रत्यय से मानता है ।
3	प्रकृतिवाद ईश्वर को काल्पनिक मानता है तथा आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता ।	3	आदर्शवाद आत्मा एवं परमात्मा में विश्वास करता है ।
4	प्रकृतिवाद आत्मा को पदार्थ तत्त्वों से बना मानता है, जो नष्ट हो जाती है ।	4	आदर्शवाद आत्मा को अमरता एवं पुनर्जन्म में विश्वास करता है ।
5	प्रकृतिवाद किसी मूल्य में विश्वास नहीं करता । वह केवल प्रकृति में विश्वास करता है ।	5	आदर्शवाद शाश्वत मूल्य सत्यं शिवं सुन्दरं में विश्वास करता है ।
6	प्रकृतिवाद मनुष्य को पशु तुल्य मानता है ।	6	आदर्शवाद मनुष्य को सर्वोच्च रचना मानता है ।
7	प्रकृतिवाद बालक को प्रमुख स्थान देता है और अध्यापक की भूमिका गौण मानता है ।	7	आदर्शवाद शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा को प्रमुख स्थान देता है, उसे देव तुल्य मानता है ।
8	प्रकृतिवाद प्राकृतिक विषयों को जैसे–भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, कृषि आदि का अध्ययन इन विषयों को अधिक महत्त्व देता है ।	8	आदर्शवाद पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, साहित्य, कला, संगीत, सौन्दर्यनुभूति आदि विषयों को महत्त्व देता है।
9	प्रकृतिवाद शिक्षा द्वारा समायोजन के उद्देश्य को महत्त्व देता है ।	9	आदर्शवादी शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का निर्माण, शाश्वत मूल्यों की प्राप्ति, संस्कृति का विकास, आध्यात्मिक विकास आदि को प्रमुख मानते हैं ।
10	प्रकृतिवादी क्रिया विधि, स्वःअनुभव विधि, खेल विधि तथा स्वयं करके सीखने की विधि को महत्त्व देते हैं ।	10	आदर्शवाद मनन–चिंतन, तर्क, प्रश्नोत्तर, वाद–विवाद तथा व्याख्यान विधि को महत्त्व देते हैं ।
11	प्रकृतिवाद स्वःअनुशासन, प्राकृतिक अनुशासन, आत्मनियंत्रण आदि के समर्थक हैं।	11	आदर्शवाद आंतरिक अनुशासन तथा प्रभावात्मक अनुशासन और ज्ञान इन्द्रिय नियंत्रण पर बल देते हैं ।
12	प्रकृतिवादी स्वतंत्रता में अधिक विश्वास करते हैं और कहते हैं कि किसी मूल्य, आदर्श एवं चरित्र की आवश्यकता नहीं है । प्रकृतिवादी के अनुसार आदत ऐसी बनाइए की कोई आदत ही न पड़े ।	12	आदर्शवादी अच्छी आदतों, आदर्शों, उत्तम नैतिक चरित्र, सामाजिक मूल्यों द्वारा व्यक्ति को अनुशासित जीवन जीने की सलाह देते हैं ।
13	प्रकृतिवादी विद्यालय में औपचारिकता का विरोध करते हैं । वे समय–सारणी के पक्ष में भी नहीं हैं ।	13	आदर्शवादी विद्यालय मे समय–सारणी, निश्चित पाठ्यक्रम तथा विद्यालय की निश्चित आचार संहिता के पक्ष में है ।
14	प्रकृतिवाद समाज को बुराईयों की जड़ मानता है, इसलिए बालक पर उसकी छाया भी नहीं पड़ने देने चाहता है ।	14	आदर्शवाद सह–शिक्षा को सामाजिक विकास का साधन मानता है और समाज से घनिष्ट संबंध रखता है ।

PTEC GURWA SITAGARHA HAZARIBAG

प्रयोजनवाद (Pragmatism)

अर्थः– प्रयोजनवाद अंग्रजी भाषा के शब्द Pragmatism का हिन्दी रूपान्तर है । जिसकी उत्पति ग्रीक भाषा के शब्द Pragma से हुई है । Pragma का अर्थ है क्रिया, किया गया काम या प्रभावपूर्ण कार्य । कुछ विद्वानों का कहना है कि इस शब्द की उत्पति ग्रीक शब्द Pragmatikus से हुई है । जिसका अर्थ है उपयोगिता या व्यावहारिकता । अतः हम सकते हैं कि प्रयोजनवाद वह विचारधारा है जो उन्हीं बातों को सत्य मानती है जो व्यावहारिक जीवन में काम आ सके । इस विचारधारा में व्यावहारिक क्रिया को पधानता दिया जाता है । अर्थात् क्रिया की एक ही कसौटी है परिणाम । परिणाम संतोषजनक हो तो क्रिया उचित मानी जाती है अथवा अनुचित । अंतः प्रयोजनवादी विचारधारा के अनुसार किसी कार्य और साधन के लिए व्यावहारिकता और उपयोगिता आवश्यक है अन्यथा उसका कोई महत्त्व नहीं है । उपयोगिता पर जोर देने के कारण इस विचार धारा को प्रयोजनवाद या व्यावहारवाद भी कहा जाता है ।

प्रयोजनवाद का सिद्धांत है कि जो क्रिया जितनी ही अधिक उपयोगी होगी वह उतनी ही सत्य होगी । प्रयोजनवादी शाश्वत सिद्धांतों पर विश्वास नहीं करते। उनके अनुसार कोई भी आदर्श नित्य और आध्यात्मिक नहीं हैं । देश, काल और परिस्थिति के अनुसार सभी वस्तुओं और उनकी उपयोगिता में परिवर्तन होता रहता है । जो वस्तु एक युग में उपयोगी होती है वहीं दूसरे युग में अनुपयोगी और जो एक युग में अनुपयोगी होती है वह दूसरे युग में उपयोगी हो सकती है ।

प्रयोजनवाद की परिभाषाएँ

1. **रस्क**– प्रयोजनवाद एक प्रकार से नवीन आदर्शवाद के विकास की अवस्था है, एक ऐसा आदर्शवाद जो वास्तविकता के प्रति पूर्ण न्याय करेगा, व्यवहार तथा आध्यात्मिक मूल्यों का मेल कराएगा और इसके परिणाम स्वरूप जिस सस्कृति का निर्माण होगा उसमें निपुणता का प्रमुख स्थान होगा न कि उसकी उपेक्षा होगी ।
2. **रॉस**– '' प्रयोजनवाद मूलतः एक मानवतावादी दर्शन है वह यह मानता है कि मनुष्य कार्य करने में अपने लक्ष्यों का सृजन करता है कि सत्य अभी भी निर्माण की अवस्था में है और अपने स्वरूप का कुछ हिस्सा भविष्य के लिए छोड़ देता है कि हमारे सत्य मनुष्य निर्मित वस्तुएँ हैं ।''
3. **विलियम जेम्स**– '' प्रयोजनवाद मस्तिष्क का प्रभाव और दृष्टिकोण है यह सत्य और विचारों की प्रकृति का सिद्धांत है । यह वास्तविकता का भी सिद्धांत है ।''

प्रयोजनवाद की विशेषताएँ

1. **सत्य हमेशा परिवर्तनशील होता हैः**– प्रयोजनवाद किसी निश्चित तथा शाश्वत सत्य अथवा सिद्धांत को स्वीकार नहीं करता, उसकी दृष्टि में प्रत्येक सत्य, सिद्धांत तथा दर्शन की कसौटी मनुष्य का सांसारिक जीवन है । सत्य का मूल्य उसके जीवन में प्रयुक्त

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

होने के उपरान्त ही आँका जा सकता है । आज का सत्य कल भी ठीक होगा यह दृढ़ता पूर्वक नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि परिस्थितियों के साथ सत्य को भी बदलना पड़ता है । उस पर देश, काल और स्थिति का प्रभाव पड़ता है, अतः वह परिवर्तनशील है । प्रत्येक युग का सत्य दूसरे युग के सत्य से भिन्न होता है ।

2. **समस्याएँ सत्य की प्रेरक हैं**:– प्रयोजनवादियों के अनुसार मानव के जीवन में नई–नई समस्याएँ बराबर आती रहती हैं । इन समस्याओं के समाधान के लिए मानव अपने जीवन में अनेक प्रयोग करता है । और प्रयोग ही सत्य का रूप धारण कर लेता है । यदि प्रयोग सफल हुआ तो वही सत्य बन जाता है । इसी तरह जीवन में आने वाली समस्याएँ सत्य की खोज करने की प्रेरणा प्रदान करती हैं ।
3. **सत्य मानव निर्मित होता है**:– प्रयोजनवादियों के अनुसार सत्य किसी चीज में पहले से विद्यमान नहीं होता बल्कि वह मनुष्य के द्वारा बनाया जाता है । परिस्थितियों के परिवर्तन के फलस्वरूप मनुष्य के जीवन में अनेक समस्याएँ आती हैं । इन समस्याओं की पूर्ति के लिए मानव सदैव चिन्तन किया करता है । इस चिन्तन में आए समस्त विचार सत्य नहीं होते हैं । सत्य तो केवल वही विचार होते हैं जिनका प्रयोग करने पर संतोषजनक फल प्राप्त होता है ।
4. **बहुत्ववाद का समर्थन**:– अन्तिम सत्य एक है या दो इस संबंध में प्रमुखता तीन बार प्रचलित है । एकत्ववाद, द्वैत्ववाद और बहुत्ववाद । प्रयोजनवादी बहुत्ववाद को स्वीकार करते हैं । इसके विषय में **रस्क** ने लिखा है – "प्रकृतिवाद प्रत्येक वस्तु की जीवन (भौतिक तत्व) आदर्शवाद मन या आत्मा मानता है । प्रयोजनवाद इस बात की आवश्यकता ही नहीं समझता है कि किसी एक तत्व या सिद्धांत के आधार पर स्पष्टीकरण किया जाए । प्रयोजनवाद अनेक सिद्धांतों को स्वीकार करने में संतुष्ट है इस तरह वह बहुत्ववादी है ।"
5. **उपयोगिता के सिद्धांत का समर्थन**:– प्रयोजनवाद की दृष्टि से प्रत्येक कार्य विश्वास की उपयोगिता है । यदि कोई सिद्धांत हमारे लिए उपयोगी है, हमारे उद्देश्य को पूरा करता है, हमारी समस्या को हल करता है, कठिनाईयों के निराकरण में सहयोग देता है तो वह ठीक है अन्यथा नहीं । जो विचार अथवा वस्तु हमारे लिए उपयोगी नही है वह व्यर्थ है । प्रत्येक विचार, वस्तु तथा कार्य की अच्छाई बुराई इस बात पर निर्भर है कि उसका फल कैसा होगा । अच्छे फल वाला कार्य ही उत्तम कार्य कहा जाएगा । वही सिद्धांत श्रेष्ठ है जो जीवन के लिए सुख और संतोष की सृष्टि कर सके । अतः इस क्षेत्र में उपयोगिता ही एकमात्र हमारी कसौटी होना चाहिए ।
6. **मानकीय शक्ति पर बल**:– प्रयोजनवादी मानव की शक्ति को विशेष महत्त्व प्रदान करते हैं । उनके अनुसार मानव अपनी शक्ति के द्वारा अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल वातावरण बना लेता है । वह विभिन्न समस्याओं का सफलतापूर्वक सम्पादन करता है । और इस प्रकार अच्छे वातावरण का निर्माण करता है ।
7. **निश्चित लक्ष्य और निरंतर आदर्श में विश्वास नहीं करता**:– प्रयोजनवाद जीवन के निश्चित लक्ष्य तथा उसके अनुसार जीवन के मूल्य और लक्ष्य परिवर्तनशील है । देश, काल और परिस्थितियों द्वारा आवश्यकतानुसार नए आदर्शों की सृष्टि होती रहती है और साथ–साथ परिवर्तन का क्रम ही चलता रहता है । जीवन स्वयं एक प्रयोगशाला है जिसमें नए–नए मूल्य और लक्ष्य अपने आप हमारे सामने आ जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक

PTEC GURWA SITAMARHI HAZARIBAG

व्यक्ति जीवन में प्रयोग और क्रियात्मकता द्वारा स्वयं नवीन आदर्शों की खोज और प्रतिष्ठा करता है ।

8. **आध्यात्मिक तत्वों की उपेक्षाः**– प्रयोजनवादी व्यावहारिक जीवमात्र से संबंध रखना उचित समझते हैं । वे ईश्वर, आत्मा, धर्म इत्यादि का व्यावहारिक जीवन से कोई सम्बन्ध न रखने के फलस्वरूप उनका कोई भी महत्त्व स्वीकार नहीं करते । उनकी दृष्टि में क्रिया ही नैतिकता का धर्म है । वे प्रयोग की कसौटी पर कसा हुआ सत्य ही सत्य मानते हैं । अलौकिकता में उनका कोई विश्वास नहीं । प्रयोजनवादियों के सम्पूर्ण सृष्टि की माप स्वयं मनुष्य है उससे अलग कोई क्रिया, कल्पना वे स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं ।
9. **विकास में आस्थाः**– प्रयोजनवादी विकास के समर्थक हैं । प्रयोग में गहरी आस्था है और प्रयोग का परिणाम ही उनका सत्य है । **जेम्स** ने लिखा है, प्रकृतिवाद के लिए वास्तविकता पूर्ण निर्मित वस्तु है और अनादि काल से पूर्ण है, किन्तु प्रयोगवाद के लिए वास्तविकता का अभी निर्माण हो रहा है और भविष्य में इसकी पूर्णतः को परीक्षा की जा रही है ।
10. **विचारों की अपेक्षा क्रिया पर प्रधानता और स्वअनुभव पर बलः**– प्रयोजनवाद के अनुसार पहले क्रिया होती है, फिर विचार उत्पन्न होते हैं । इस प्रकार ज्ञान क्रिया का परिणाम होता है । जीवन की वास्तविकता में विभिन्न क्रियाएँ ही महत्त्वपूर्ण हैं । किसी पूर्व परम्परा का अनुगमन उचित नहीं है, उससे जीवन की गतिशीलता कुण्ठित होती है और इच्छित सत्य के दर्शन नहीं हो पाते । जीवन की सफलता स्वःअनुभूति सत्य के उदय और स्वीकृति में है। अतः विचारों की अपेक्षा क्रिया को प्रधानता मिलनी चाहिए ।
11. **सामाजिक और प्रजातांत्रिक दृष्टिकोणः**– प्रयोजनवादी सामाजिक और प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण पर विशेष बल देते हैं । उनका कथन है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और बालक में सामाजिक कुशलता की भावना ही उत्पन्न करना वास्तविक शिक्षा। समस्त मानवीय क्रियाओं की उपयोगिता समाज को ध्यान में रखकर ही आँकी जा सकती है । वही शिक्षा सही है जो बालकों में समानता, जनतंत्रात्मकता और सामाजिकता आदि की भावनाएँ उत्पन्न करने में सहायक है ।

प्रयोजनवाद में शिक्षा उद्देश्य

1. **पूर्व निश्चित उद्देश्य का विरोधः**– प्रयोजनवादी सत्य को परिवर्तनशील मानते हैं और कहते हैं कि समय, कार्य और परिस्थिति के अनुसार सत्य में परिवर्तन होता रहता है। अतः वे शिक्षा के पूर्व निश्चित उद्देश्य को स्वीकार नहीं करते । प्रयोजनवादी किसी भी प्राचीन उद्देश्य, आदेश या नियम को बालका पर लादने के पक्ष में नहीं हैं। इस विषय में **जॉन डी.वी.** ने कहा है, ''शिक्षा के उद्दश्य नहीं होते, शिक्षा एक अमूर्त्त विचार है । उद्देश्य केवल व्यक्तियों के होते हैं । और व्यक्तियों के उद्देश्य विभिन्न व्यक्तियों के विभिन्न उद्देश्य होते हैं, जो एक–दूसरे से अलग होते हैं । जैसे–जैसे बालक बड़े होते जाते हैं वैसे–वैसे उनके उद्देश्य भी बदलते जाते हैं । निर्धारित किये हुए उद्देश्य भलाई की अपेक्षा बुराई ही अधिक करते हैं ।''
2. **नवीन मूल्यों का निर्माणः**– प्रयोजनवादियों के अनुसार बालक को स्वयं अपने मूल्यों और आदर्शों का निर्माता होना चाहिए । इस प्रकार प्रयोजनवादी मानते हैं कि शिक्षा का

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

उद्देश्य बालकों को अपने मूल्यों और आदर्शों का निर्माण करने के योग्य बनानाहोना चाहिए । इस विषय में **रॉस ने** लिखा है – '' प्रयोजनवादी का सबसे सामान्य शैक्षिक उद्देश्य नवीन मूल्यों की रचना करना है । शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य शिक्षार्थी को ऐसे वातावरण में रखना है जिसमें रहकर उसमें नवीन मूल्यों का विकास हो सके ।''

3. **सामाजिक व्यवस्था की उन्नतिः**– प्रयोजनवादी शिक्षा को मानव या समाज केन्द्रित मानते हैं । उनका कहना है कि शिक्षा का उद्देश्य मानव कल्याण या सामाजिक व्यवस्था का उन्नति करना होना चाहिए । इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए **बटलर** ने लिखा है –'' शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य का अर्थ संसार का सुसंगठित वातावरण तैयार करना माना जाता है ।''
4. **सामाजिक कुशलता की वृद्धिः**– प्रयोजनवादी शिक्षा के सामाजिक कार्यों पर भी बल देते हैं । **जॉन डी.वी** ने सामाजिक निपुणता को शिक्षा का उद्देश्य माना है । उसने लिखा है कि सामाजिक निपुणता का अर्थ प्रत्येक प्रकार के सामाजिक संबंध में मधुरता और बहुमुखी कुशलता बनाए रखना है ।

इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति की शक्तियों और क्षमताओं को इस प्रकार विकसित होने देना है कि वह सामाजिक रूप में एक कुशल व्यक्ति हो जाए ।

प्रयोजनवाद और शिक्षण विधियाँ

1. **बाल केन्द्रित शिक्षा पद्धतिः**– प्रयोजनवादियों का कहना है कि प्रत्येक शिक्षण पद्धति बाल केन्द्रित होनी चाहिए और उसे बालकों की अभिरूचियों, उद्देश्यों और आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए जिससे बालक असानी से शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं ।
2. **करके सीखने या स्वानुभव से सीखनाः**– प्रयोजनवाद विचारों के बजाय कार्य पर अधिक बल देता है । प्रयोजनवादियों का कहना है कि बालकों को पुस्तकों की अपेक्षा कार्यों या अनुभवों से अधिक सीखना चाहिए । व्यावहारिक कार्य को सभी विषयों की शिक्षा का आधार बनाया जाना चाहिए । बालकों को वे सभी साधन उपलब्ध होने चाहिए जिनकी सहायता से वे कार्य या अनुभव से सीख सकें ।
3. **सानुबंधिताः**– प्रयोजनवादी ज्ञान को खण्डों में बाँटने के पक्ष में नहीं है । उनका मानना है कि ज्ञान कई प्रकार का हो सकता है, लेकिन सम्पूर्ण ज्ञान एक है । अतः पढ़ाते समय इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि समस्त ज्ञान और शिक्षा को एक–दूसरे से सह–संबंधित/समन्वय करके दिया जाए जिससे सभी प्रकार के ज्ञान में एकता स्थापित हो सके ।
4. **योजना विधिः**– प्रयोजनवादियों ने शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुत अच्छी शिक्षा विधि दी है । जिसको हम योजना विधि कहते हैं । इसके जन्मदाता **डी.वी.** के शिष्ट **कीलपैट्रिक** थे । प्रयोगवादी बालक के सामने वास्तविक समस्याएँ उपस्थित करते हैं। जिन विषयों, क्रियाओं और क्षमता की उन्हें आवश्यकता पड़ती है उनको वे सीख जाते हैं । अर्थात् बालक स्वयं उसका हल निकालते हैं । शिक्षक बालकों का कुछ सुझाव अवश्य देता है, परन्तु उनको अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता देता है । बालक प्रत्येक समस्या के समाधान में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं । वे एक दूसरे का सहयोग प्राप्त करते हैं । इस प्रकार शिक्षण की योजना पद्धति प्रयोजनवादियों की महान देन है ।

PTEC GURWA, HAZARIBAG

प्रयोजनवादी शिक्षा के गुण–दोष

गुणः–

प्रयोजनवादी दर्शन एक व्यावहारिक दर्शन है जो आप के बदलते परिवेश एवं दृष्टिकोण में विश्वसनीय और सर्व ग्राह्य है । शिक्षा के क्षेत्र में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है, जो निम्नलिखित हैं:–

1. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतिपादनः**– प्रयोजनवादी दर्शन प्रयोगों एवं अनुभवों को महत्त्व देता है जो विज्ञान की आधारशिला है । इस प्रकार से वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास को बढ़ावा देता है ।
2. **गतिशील एवं लचीलेपन के विकास पर बलः**– यह दर्शन वस्तुतः गतिशील एवं लचीले मस्तिष्क के निर्माण पर बल देकर बालक को भावी जीवन के प्रगति के मार्ग प्रशस्त करता है । इससे बालक समय एवं परिस्थिति के अनुसार अपने में परिवर्तन ला सकता है ।
3. **जीवन में वास्तविकता को महत्त्व देना**– प्रयोजनवादी सैद्धान्तिक दर्शनों एवं विचारों में विश्वास नहीं करता है, बल्कि व्यावहारिकता को मानता है । इसलिए कहता है जो हमारे वास्तविक जीवन के लिए उपयोगी हो, जिससे हमारा भावी जीवन सुखी एवं समृद्ध हो सके, उन्हीं विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान देना चाहिए ।
4. **सामाजिक जीवन महत्त्वपूर्णः**– प्रयोजनवाद वैयक्तिक विकास के अपेक्षा सामाजिक विकास को महत्त्व देता है । इसलिए शिक्षा को सामाजिक विकास का साधन माना है । प्रयोजनवादी सामाजिक पर्यावरण को वैयक्तिक विकास के लिए आवश्यक मानते हैं । यह दृष्टिकोण समकालिक और उचित है क्योंकि मनुष्य जन्म से ही पशु होता है लेकिन सामाजिक वातावरण में ही उसकी मूल प्रवृत्तियों का शोधन होता है। जिससे वह एक सामाजिक मानव बनता है ।
5. **विद्यालय एक सामुदायिक प्रशिक्षण केन्द्रः**– प्रयोजनवादी मानते हैं कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है । विद्यालय की स्थापना समाज सभ्य नागरिक के निर्माण के लिए करता है । अतः विद्यालय का कार्य ऐसे ही कुशल, सभ्य एवं उत्पादक नागरिक का निर्माण करना है । जिससे समाज सुदृढ़ बन सके, क्योंकि अच्छा समाज तभी बनेगा जब अच्छे नागरिकों का निर्माण हो ।

दोषः–

1. प्रयोजनवाद केवल इसी संसार की बात करता है । यह इतना भौतिकवादी दर्शन है कि जिसमें आध्यात्मिक गुणों के लिए कोई स्थान नहीं मिल पाता, जबकि जीवन में आध्यात्मिक गुणों का विशेष महत्त्व है ।
2. प्रयोजनवाद मात्र उपयोगिता और परिणामों के आधार पर सत्य का निर्धारण करता है लेकिन मनुष्य के लिए कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो उपयोगी तो नहीं हैं लेकिन आवश्यक

PTEC GURWA SITAGARHA, HAZARIBAG

हो, जैसे– आध्यात्मिक विचार । इसके द्वारा मनुष्य को शान्ति मिलती है । जबकि भौतिकता प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष उत्पन्न करने वाली होती है । इसी प्रकार परिवार का एक बुजुर्ग आर्थिक उत्पादन के लिए उपयोगी नहीं है लेकिन परिवार के लिए आवश्यक है ।

3. यह पूर्व निश्चित मान्यताओं तथा आदर्शों की दृष्टि से देखता है ।
4. प्रयोजनवाद सत्य को हमेशा रहने वाला न मानकर परिवर्तनशील मानता है । इसकी यह धारणा त्रुटिपूर्ण कही जा सकती है । क्योंकि सत्य तो निश्चित ही होता है ।
5. सांस्कृतिक आदर्श इतने मूल्यवान हैं लेकिन प्रयोजनवाद उनकी उपेक्षा करता है ।
6. प्रयोजनवाद ने शिक्षा का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं बतलाया है ।

यथार्थवाद (Realism)

प्रकृतिवाद शिक्षण विधि में नहीं वरन् शैक्षिक उद्देश्यों में असंतोष जनक है ।

उत्तम समाज व्यवस्था तथा संचालन में आदर्शवाद योगदान देता है ।

प्रयोजनवाद उपयोगिता के सिद्धान्त पर ही आधारित है ।

यथार्थवाद विज्ञान को महत्त्व देता है या विज्ञान की प्रगति से संसार का हर प्रकार का कल्याण है ।

ग्रीक भाषा Res (वस्तु)

अर्थः– यथार्थवाद वस्तु के अस्तित्व संबंधी विचारों के प्रति एक दृष्टिकोण है जो प्रत्यक्ष जगत को सत्य मानता है । आदर्शवाद के अनुसार सत्य का निवास मानव मस्तिष्क में है । परन्तु यथार्थवाद के अनुसार इसका निवास भौतिक जगत की वास्तविक वस्तुओं और घटनाओं में है । जैसे– वर्षा होती है, सूर्य चमकता है, ऋतुओं में परिवर्तन होता है, पृथ्वी अपनी दूरी पर घूमती है । ये सारे घटनाएँ सत्य हो चाहे हमें इनका ज्ञान हो या नहीं । इस दृष्टि से यथार्थवाद भौतिकवाद पर आधारित है । यही कारण है कि यथार्थवादी विचारों एवं सिद्धांतों की अपेक्षा वस्तुओं एवं घटनाओं की वास्तविकता पर बल देते हैं ।

यथार्थवाद अंग्रेजी भाषा के शब्द Realism का हिन्दी रूपान्तर है । Real शब्द की उत्पति ग्रीक भाषा के Res शब्द से मानी जाती है । जिसका अर्थ वस्तु है । अतः का अर्थ वस्तु संबंधी विचारधारा से है ।

परिभाषाएँ

1. **नेफः**– ''यथार्थवाद, आत्मगत, आदर्शवाद का प्रतिकार है जो सत्य का निवास मानव मस्तिष्क में मानता है । सब यथार्थवादी इस बात से सहमत हैं कि सत्य और

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

वास्तविकता का अस्तित्व है और रहेगा, भले ही किसी व्यक्ति को उसके अस्तित्व का ज्ञान न हो ।''

2. **ब्राउनः**– ''यथार्थवाद का मुख्य विचार यह है कि सब भौतिक वस्तुएँ या बाह्य जगत के पदार्थ वास्तविक हैं और उनका अस्तित्व देखने वाले से पृथक है । यदि उनको देखने वाले व्यक्ति न हो तो भो उनका अस्तित्व होगा और वे वास्तविक होंगे ।''
3. **स्वामी रामतीर्थः**– ''यथार्थवाद का अर्थ वह विश्वास या सिद्धांत है जो जगत को वैसा ही स्वीकार करता है जैसा कि हमें दिखाई देता है ।''

विशेषताएँ

यथार्थवादी बालक को रूढ़ीवादी, सैद्धान्तिक, काल्पनिक शिक्षा से दूर कर उन्हें व्यावहारिक एवं उपयोगी शिक्षा देने का समर्थन करते हैं । अतः यथार्थवादी शिक्षा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैंः–

1. **ज्ञानेन्द्रियाँ प्रशिक्षण को महत्त्वः**– यथार्थवादी मानते हैं कि हमारी ज्ञानइन्द्रियाँ ज्ञान के द्वारा हैं । समस्त ज्ञान इन्हीं के माध्यम से आता है । अतः यदि ये पशिक्षित होंगी तो बाह्य जगत के ज्ञान को सरलता से प्राप्त कर सकेंगे ।
2. **पुस्तकीय ज्ञान का विरोधः**– यथार्थवादी पुस्तकीय ज्ञान को निरर्थक बताते हैं क्योंकि इससे यथार्थता का ज्ञान नहीं होता है । पुस्तकीय ज्ञान किसी दूसरे व्यक्ति के विचारों का संकलन है । उसमें स्वयं की अनुभूति नहीं होती है तथा इससे विवेक तथा निर्णय शक्ति का विकास नहीं होता है ।
3. **वर्तमान जीवन को सुखी बनाने पर बलः**– यथार्थवादी आदर्शवादियों के काल्पनिक सुख में विश्वास नहीं करते वरन् वर्तमान जीवन को सुखी बनाने पर बल देते हैं ।
4. **विज्ञान की शिक्षा का महत्त्वः**– यथार्थवाद काल्पनिक साहित्य की अपेक्षा वास्तविक जीवन से संबंधित विषयों पर बल देते हैं । विज्ञान की शिक्षा में बौद्धिक स्वप्रयत्न का अवसर प्राप्त होता है और व्यक्ति स्वयं सत्य की खोज करता है ।
5. **विद्यालय में कृत्रिमता का विरोधः**– यथार्थवादी विद्यालय को सत्य की खोज का स्थल मानते हैं । जहाँ कृत्रिमता नहीं होना चाहिए । उनका मानना है है कि विद्यालय की शिक्षा हमारे वास्तविक जीवन से संबंधित होनी चाहिए । जिससे हम समाज के एक उपयोगी नागरिक बन सकें ।
6. **मानवीय शिक्षा पर बलः**– शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण कार्य यह भी है कि वह ऐसे नागरिक का निर्माण करें जिसमें मानवीय तथा अनेक गुण और भावनाएँ हों, जिसमें परस्पर स्नेह, प्रेम एवं सहानुभूति उत्पन्न हो । यथार्थवादी इस पर ज्यादा बल देते हैं ।
7. **व्यावसायिक शिक्षा पर बलः**– यथार्थवादी जीवन की सत्यता में विश्वास करते हैं और जीवन तभी सत्य है जब व्यक्ति आत्मनिर्भर हो । सैद्धान्तिक ज्ञान से मस्तिष्क की भूख भले मिट जाए लेकिन शारीरिक भूख के लिए यश या धन की आवश्यकता होती है । जिससे हम अपना पेट भरते हैं । अतः यथार्थवादी शिक्षा का लक्ष्य किसी व्यवसाय के लिए तैयार करना है ।
8. **समाजिकता एवं व्यक्तिकता को महत्त्वः**– यथार्थवादी शिक्षा सामाजिक एवं वैयक्तिक दोनों दृष्टिकोण के समन्वय पर बल देती है । व्यक्ति का विकास इस विचार धारा के

PTEC GURWA SITAGARHA HAZARIBAG

लोग समाज से अलग नहीं करना चाहते बल्कि सामाजिक आवश्यकता के अनुरूप व्यक्ति के विकास के पक्ष में हैं ।

9. **बलक की नियंत्रित स्वतंत्रताः**– यथार्थवादी विचारधारा में बालक की नियंत्रित स्वतंत्रता पर बल दिया जाता है । उसे प्रकृतिवादियों की तरह स्वच्छंद नहीं छोड़ना चाहते हैं । लेकिन बालक के रूचि, इच्छा तथा भावनाओं का दमन नहीं किया जाता ।
10. **शिक्षा पूर्ण जीवन की तैयारीः**– यथार्थवादी शिक्षा द्वारा मनुष्य का पूर्ण विकास करने का समर्थन करते हैं । जिसमें शारीरिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक सभी पक्ष सम्मिलित हैं ।

यथार्थवाद और शिक्षण विधियाँ

यथार्थवाद मौखिक एवं निष्क्रिय शिक्षण विधियों को महत्त्व नहीं देते, बल्कि वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठ तथा क्रियात्मक शिक्षण विधि पर बल देते हैं । इस विचारधारा में इन्द्रिय प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है । क्योंकि ज्ञानेन्द्रिय ज्ञान के द्वार होते हैं । अतः भ्रमण, प्राकृतिक निरीक्षण तथा प्रयोग और अनुभव द्वारा सीखने पर बल दिया जाता है । यथार्थवाद मुख्य रूप से निम्नलिखित विधियों को महत्त्व देता हैः–

1. **ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षणः**– **कमेनियस** ने शिक्षा में ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण को महत्त्व दिया, क्योंकि सम्पूर्ण ज्ञान इन्हीं के द्वारा अर्जित होता है । अन्य शिक्षा शास्त्री भी इसे ही महत्त्वपूर्ण माना । प्रकृतिवादी विचारक भी ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण के लिए भ्रमण, देशाटन, प्रकृति निरीक्षण को महत्त्व देते हैं ।
2. **स्थूल से सूक्ष्म की ओर शिक्षाः**– यथार्थवादी शाब्दिक और मौखिक ज्ञान को निरर्थक मानते हैं, क्योंकि वह वास्तविक नहीं होता है । इनके अनुसार ठोस पदार्थ के द्वारा सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान किया जाय । यदि पहाड़ या पठार पढ़ाना है तो उन्हें मौखिक न पढ़ा कर यदि संभव हो तो उसे प्रत्यक्ष दिखाकर ज्ञान दिया जाए और यदि संभव नहीं हो तो उनके मॉडल दिखाकर पढ़ाया जाए ं इसी आधार पर शिक्षा में श्रव्य–दृश्य साधन का शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग होने लगा है तथा शैक्षिक भ्रमण के आयोजन पर बल दिया जाने लगा है ।
3. **वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक विधिः**– यथार्थवाद वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक विधि के प्रयोग पर बल देते हैं तथा वे इस विधि में निरीक्षण संफलन विश्लेषण एवं आगमन का प्रयोग करते हैं तथा प्रयोगात्मक पद्धति को सर्वोत्तम विधि के रूप में स्वीकार करते हैं । यथार्थवाद यांत्रिक विधियाँ रटने का विरोध करते हैं । वे स्वःअनुभव द्वारा वास्तविक परिस्थिति में ज्ञानार्जन पर बल देते हैं । यथार्थवाद ज्ञान को वस्तुनिष्ठ मानता है । इनके अनुसार पदार्थ यथार्थ है और शब्द प्रतीक । शब्द और पदार्थ को संयुक्त कर देने से अर्थ की उत्पति होती है, जैसे– मनुष्य एक प्रतीक है ओर मनुष्य जाति पदार्थ । जब दोनों संयुक्त होते हैं तो अर्थ निकलता है । इस प्रकार वस्तुनिष्ठ विधि द्वारा प्रतीक एवं मूल पदार्थों में संबंध स्थापित करके शिक्षा दी जा सकती है ।
4. **सहसंबंध द्वारा शिक्षाः**– यथार्थवाद ज्ञान की एकता में विश्वास करता है । जहाँ आदर्शवाद पर्ण से चलकर अंश तक पहुँचता है । वहीं यथार्थवाद अंश से चलकर पूर्णतः को प्राप्त करने को महत्त्व देता है । इसलिए इस विचारधारा में सहसंबंध विधि द्वारा सीखने पर बल दिया जाता है । सहसंबंध विधि द्वारा संश्लेषित ज्ञान प्राप्त होता है,

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

जिसमें सभी अलग–अलग चीजों का जोड़कर एक नवीन या पूर्ण वस्तु का ज्ञान होता है । जैसे एक वृक्ष में जड़, शाखाएँ, पत्तियाँ आदि भाग होते हैं। लेकिन जब ये जुड़ते हैं तभी एक पूर्ण वृक्ष बनता है । इन्हें अलग–अलग कर देने से वृक्ष की अनुभूति नहीं होती है । यद्यपि इन सभी का अस्तित्व है लेकिन सभो में सहसंबंध है, जो पूर्णतः की ओर ले जाता है । इसी प्रकार से ज्ञान की बहुत सी शाखाएँ होती हैं लेकिन एक–दूसरे से संबंधित हैं । शिक्षा का कार्य इनको जोड़ने का है तोड़ने का नहीं ।

आधुनिक शिक्षा पर यथार्थवाद का प्रभाव

1. हमारी आधुनिक शिक्षा की परिभाषाओं पर यथार्थवाद का पूर्ण प्रभाव है । यथार्थवाद के अनुसार शिक्षा का रूप व्यावहारिक होना चाहिए ।
2. यथार्थवादियों ने शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक के महत्त्व को स्वीकार किया है । परन्तु साथ ही उन्होंने बालक के महत्त्व को अस्वीकार नहीं किया है । वे बालक की शिक्षा उसकी रूचियों, क्षमताओं और बौद्धिक स्तर पर देना चाहते हैं ।
3. शिक्षा के उद्देश्य कोरी कल्पना का विषय न हो जाए इसलिए इसे यथार्थ पर आधारित करने का प्रयास किया जाता है ।
4. आधुनिक पाठ्यक्रम पर भी यथार्थवाद का स्पष्ट प्रभाव है । जैसे– पाठ्यक्रम को काफी विस्तृत किया गया है और उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है ।
5. अनुसंधान के क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि को स्थान दिया गया है । आत्म प्रणाली को महत्त्व, अनुशासन में वास्तविकता का प्रवेश यथार्थवाद की ही देन है ।
6. शिक्षक अब कक्षा में छात्रों को केवल तथ्यों का ज्ञान कराना ही अपना लक्ष्य समझते हैं । वे केवल विचार तथा भावनाओं को महत्त्व नहीं देते । शिक्षा के इन तथ्यों पर यथार्थवाद का विशेष प्रभाव पड़ा है ।
7. अब छात्रों को वस्तुनिष्ठ ढंग से ज्ञान प्रदान किया जाता है । यहाँ भी यथार्थवाद का शिक्षा पर एक प्रभाव है ।
8. विद्यालय का संचालन आज केवल आदर्शवाद पर ही टिका नहीं है । इससे यथार्थ बातों को स्थान दिया जाता है । यह भी हमारे आधुनिक शिक्षा पर यथार्थवाद का प्रभाव कहा जा सकता है ।
9. आज ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान को अत्यधिक महत्त्व दिया जा रहा है । कई शिक्षण विधियाँ ऐसी हैं जो ज्ञानेन्द्रियों के शिक्षण पर ही अधिक बल देती हैं । शिक्षा में यह यथार्थवाद का ही परिणाम है ।

गुण

1. यथार्थवादी शिक्षा हमें कल्पनाओं से हटाकर वास्तविकता का ज्ञान कराती है तथा हमें वास्तविक जगत में रहने योग्य बनाती है ।
2. यह शिक्षा हमें हमारी रूचि के अनुसार विषय चुनने के लिए विस्तृत पाठ्यक्रम प्रदान करती है ।
3. यह शिक्षा हमें शिक्षा एक आदर्श और उपयोगी उद्देश्य प्रदान करती है ।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

4. इसके उद्देश्य इतने अच्छे हैं कि आदर्शवाद के उद्देश्य आमूर्त्त से ज्ञान होने लगता है।
5. यह शिक्षा हमें प्रकृति की ओर ध्यान देने की प्रेरणा देती है ।
6. यह शिक्षा हमें सुन्दर विधियाँ प्रदान करती है ।
7. इसके द्वारा पाठ्यक्रम के सिद्धांत जो दिए गए हैं, उनमें तमाम गुण ही गुण दिखाई देते हैं ।

दोष

1. यथार्थवाद भौतिकवादी विचारधारा है जो वस्तु जगत, वास्तविक जगत को सत्य मानता है और आध्यात्मिक सत्य को नकार देता है । जबकि वर्तमान की समस्याओं को हल यदि भौतिकवाद से होता है । आध्यात्मिक समस्याओं का हल आध्यात्मिक ज्ञान से ही संभव है ।
2. यथार्थवाद वर्तमान जीवन को सुखी बनाने के लिए भौतिकवाद का सहारा लेता है, जबकि आदर्श विहीन बालक आदर्श समाज की स्थापना नहीं कर सकता है ।
3. यथार्थवादी पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों को सर्वोच्च स्थान देते हैं, जबकि साहित्य, कला, संगी, आध्यात्मिक दर्शन की उपेक्षा करते हैं । जबकि पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए सभी आवश्यकता है ।
4. यथार्थवाद मनुष्य की भावनाओं की उपेक्षा करते हैं । उनके मनोभावों को परखने की कहीं बात नहीं करते, जबकि मनुष्य एवं भावना प्रधान प्राणी है वह मशीन नहीं है कि जो देखेगा या सुनेगा उसे उसी रूप में स्वीकार कर लेगा । वह किसी चीज की प्रत्यक्ष रूप में स्वीकार करता है, जैसी उसकी भावनाएँ होती हैं । कहा गया है कि जैसे हम हैं वैसा ही दूसरों को देखते हैं । एक सुखी व्यक्ति को दुनिया सुखी नजर आती है और एक दुःखी व्यक्ति को सम्पूर्ण संसार दुःखमय दिखाई देता है ।
5. यथार्थवाद आत्मा तथा परामात्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है, इससे सबसे बड़ा खतरा यह है कि मनुष्य में किसी में आस्था नहों होगी और न ही किसी की आस्था स्वीकार करेगा । जिससे समाज में भ्रष्टाचार, बेईमानी, अनाचार तथा हिंसक प्रवृत्तियाँ विकसित हो सकती हैं ।
6. **श्रामसदन पाण्डेय** कि यथार्थवादी वस्तुनिष्ठ होने का दावा करता है । ज्ञान में वस्तुनिष्ठता, निधि ज्ञान में साझेदारी के अतिरिक्त कुछ नहीं है । ज्ञान सदा वस्तुनिष्ठ ही रहता है । अज्ञानता आत्मनिष्ठ होती है क्योंकि अज्ञानी व्यक्ति स्वयं को कभी अज्ञानी नहीं समझते हैं ।
7. यथार्थवाद वर्तमान को सुखी बनाने के लिए तदर्थवादी–दृष्टिकोण का आश्रय लेता है । और कहता है जो वर्तमान को सुखी बना सके उसी को अपनाना चाहिए । इस विचार के द्वारा गलत प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिल सकता है और समाज में संघर्ष उत्पन्न हो सकता है ।
8. यथार्थवाद मानवीय मूल्यों के विकास के विषय में मौन हो जाता है । यह बड़ा ही घातक है । क्योंकि मूल्य विहीन शिक्षा द्वारा मूल्यविहीन व्यक्तियों का निर्माण होगा। जिससे समाज की क्षति होने की संभावना है । जैसे– शिक्षा में जो अनीति, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता आदि बातें हैं, ये सभी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं ।

PTEC GURWA SIAGARHA, HARIBAG

9. यथार्थवाद औपचारिक शिक्षा को अधिक महत्त्व देता है, जबकि सबसे अधिक ज्ञान व्यावहारिक शिक्षा द्वारा होतो है ।
10. यथार्थवाद ने शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया है, जबकि उनमें अन्य गुणों की आवश्यकता है । जैसे– त्याग, समर्पण, सहृदयता, अध्ययनशीलता आदि ।
11. यथार्थवादी शंकालु हैं, निराशवादी हैं तथा संदेहवादी हैं ।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

बुनियादी शिक्षा

परिचयः–

मोहनदास करमचन्द गांधी का जन्म कठियावाड़ के पोरबंदर नामक स्थान में 2 अक्टूबर 1869 को हुआ। उसके पिता करमचन्द गांधी, पोरबंदर राज्य के दीवान थे। उनकी माता का नाम पुतलीबाई था। जो एक साध्वी एवं निष्ठावान स्त्री थी। उनका व्रत, उपवास आदि में दृढ़ आस्था थी।

गाँधीजी की बाल्यावस्था पोरबंदर में व्यतीत हुई। उन्होंने वही प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक पाठशालाा में दाखिला लिया। जब गाँधीजी सात वर्ष के थे तब उनके पिता दीवान होकर राजकोट गए। उन्होंने वहाँ एक विद्यालय में गाँधीजी का दाखिला कराया गाँधीजी स्वभाव से संकोची थे। इस कारण वे अपने सहपाठियों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास नहीं करते थे। उनका प्रारम्भ से ही माता–पिता की सेवा में मन लगता था। इस कारण वह विद्यालय काल में उन्होंने 'श्रवण' पितृभक्ति नामक नाटक पढ़ा और सत्य हरिशचन्द्र नामक नाटक का अभिनय देखा। इनके प्रभाव के फलस्वरूप उनके हदय में सत्य के प्रति अनुरक्ति का बीजारोपण हुआ।

तेरह वर्ष की अवस्था में उनका विवाह कस्तूरबा के साथ हुआ इस समय गाँधीजी हाइस्कूल में थे। उनकी गणना मन्द बुद्धि बालकों में थी। इसी काल में उन्होंने बुरी संगति में पड़कर माँस सेवन तथा धुम्रपान किया। परन्तु उन्होने इसकी सूचना अपने पिता को पत्र द्वारा दी और अपने दोष को स्वीकार किया। साथ ही भविष्य में ऐसा न करने के लिए वचनबद्ध हुए।

सन् 1887 ई० में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और 'श्यामलदास' कॉलेज भावनगर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रवेश किया। कॉलेज शिक्षा में मन न लगने के कारण उन्होंने वकालत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इग्लैंड को प्रस्थान किया। 1891 ई० में वकालत पास करके भारत वापस आया। यहाँ आकर उन्होंने वकालत प्रारंभ की परन्तु उनको इस कार्य में विशेष सफलता न मिली। इसी बीच किसी मुकदमें को लेकर उन्हें दक्षिण अफ्रीका बुलाया गया। अतः गाँधीजी 1893 ई० में दक्षिण अफ्रीका में गए।

दक्षिण अफ्रीका में उनका वास्तविक जीवन शुरू हुआ। उन्होने वहाँ भारतीयों की दशा को सुधारने के लिए आंदोलन चलाया। गाँधीजी ने यहीं सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप प्रदान किया। यहाँ उन्होंने 1914 तक संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत किया। और उनको इसमें सफलता मिली। गाँधीजी ने यहाँ टॉलस्टाय आश्रम उनके शिक्षा प्रयोग के लिए एक आदर्श प्रयोगशाला बनाये । उन्होंने इस अश्राम को घर के वातावरण में बदला और चरित्र को समस्त प्रकार की शिक्षा का आधार माना। यहाँ गाँधीजी ने साहित्यिक शिक्षा के साथ–साथ व्यवसायिक शिक्षा पर भी बल दिया। परन्तु उन्होंने यहाँ व्यवसाय को शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रयास नहीं किया।

गाँधीजी इंग्लैंड होते हुए 1915 ई० में भारत आए उन्होंने यहाँ आकर भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। इनके प्रवेश से भारतीय राजनीति ने नया मोड़ लिया इस समय से अपने जीवन के अंन्त तक उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता के आंदोलन का नेतृत्व किया। इनके नेतृत्व के फलस्वरूप भारतीय राजनीति में सत्य एवं अहिंसा को महत्वपर्ण स्थान मिला। गाँधीजी के नेतृत्व में भारत ने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की। उन्होने हिंदु मुस्लिम एकता के लिए 30 जनवरी 1948 को अपना जीवन प्रदान कर दिया। जिस महान दर्शनिक, राजनीतिक, समाज सुधारक, शिक्षा शास्त्री तथा महात्मा ने विश्व को सत्य और अहिंसा का उपदेश दिया था, भारत के राष्ट्रपिता कहलाये ।

PTEC GURWA, SITAMARHA, HAZARIBAG

बुनियादी शिक्षा का स्वरूप

भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी शिक्षा का सबसे अधिक महत्व है। बुनियादी शिक्षा महात्मा गाँधी का अंतिम और अधिक मूल्यवान उपहार है। बुनियादी शिक्षा ने देश की आजादी दिलाने में तथा नवीन सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था के निर्माण करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

प्रायः संसार के सभी देशों में बहुत पहले सिद्धांत रूप में बुनियादी शिक्षा को मान्यता प्रदान की भारत में सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा के रूप में गाँधीजी ने ही इसकी स्पष्ट रूपरेखा दी अतः उन्हीं के नाम से बुनियादी शिक्षा को जाना जाता है।

भारतवर्ष में तत्कालीन भारतीय शिक्षा के दोषों को देखकर महात्मा गाँधी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इससे देश तथा उसके निवासियों का कल्याण दोनों असंभव है अतः उन्होंने हरिजन नामक पत्रिका में शिक्षा के विषय में अपने विचार को व्यक्त करना प्रारंभ किया जो भारत के लिए उपयुक्त हो सकती थी। 31 जुलाई 1937 के हरिजन मे उन्होंने अपने शिक्षा विषयक विचारों को इन शब्दों में रखा ''राष्ट्र के रूप हम शिक्षा में इतने पिछड़े हुए हैं कि यदि हमने शिक्षा का यह कार्यक्रम धन पर आधारित किया तो हम राष्ट्र के प्रति शिक्षा के अपने उत्तरदायित्वों को थोड़े समय में निर्वाह करने की आशा नहीं कर सकते है अतः मैंने अपनी रचनात्मक योग्यता की ख्याति को संकट में डालकर वह प्रस्ताव करने का साहस किया है कि शिक्षा आत्मनिर्भर होनी चाहिए। शिक्षा से मेरा अर्थ है बच्चे एवं मनुष्य की संपूर्ण शारीरिक, मानसिक या आंतरिक शक्तियों का सर्वांगिण विकास। साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न आदी।

गाँधीजी के शिक्षा विषयक विचारों ने देश में हलचल मचा दी उस समय गाँधीजी 'वर्धा' में थे। वहाँ 22 और 23 अक्टूबर 1937 को मारवाड़ी हाइस्कूल की रजत जयन्ती का समारोह होने वाला था। इस अवसर पर भारत के विभिन्न भागों से शिक्षा विशेषज्ञ, राष्ट्रीय नेता एवं समाज सुधारकों को आमंत्रित किया गया था। इसे ही अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन या वर्धा शिक्षा सम्मेलन कहा जाता है। इस सम्मेलन में गाँधीजी ने शिक्षा विशेषज्ञों के समक्ष अपने शिक्षा संबंधी विचार व्यक्त किए।

सम्मेलन में जामिया–मिलिया–इस्लामिया दिल्ली के उप कुलपति डॉक्टर जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिति बनाई इस जाकिर हुसैन समिति के नाम से पुकारा जाता है। इस समिति का उद्देश्य वर्धा शिक्षा सम्मेलन में व्यक्त किए गए गाँधीजी के शिक्षा संबंधी विचारों के अनुसार एक विस्तृत पाठ्य– क्रम तैयार करना था। इस समिति ने दिसम्बर 1937 और अप्रैल 1938 में दो रिपोर्ट प्रस्तुत की पहले रिपोर्ट में वर्धा शिक्षा योजना के आधार भूत सिद्धांतो, उद्देश्यों, शिक्षको तथा उनके प्रशिक्षण, विद्यालयों के संगठन, प्रशासन एवं निरीक्षण और कताई बुनाई के विस्तृत पाठ्यक्रम इत्यादि का वर्णन किया है। दूसरे रिपोर्ट में समस्त विषयों, पाठ्यक्रम इत्यादि का वर्णन किया है। दूसरे रिपोर्ट में समस्त विषयों, पाठ्यक्रम एवं उनको आधारभूत हस्त तथा उत्पादन कार्य से संबंधित करने के उपायों पर अपना विचार प्रस्तुत किया।

बुनियादी शिक्षा योजना की रूपरेखा

क. यह शिक्षा 6–14 वर्ष तक के आयु के बालक–बालिकाओं के लिए निःशुल्क और अनिवार्य है।

ख. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है।

ग. सम्पूर्ण शिक्षा का सम्बन्ध किसी आधारभूत उद्योग हो।

घ. चुने हुए उद्योग की शिक्षा इस प्रकार दी जाती है कि वह बच्चों को उत्तम कारीगर बना देती है। वे जो वस्तुएँ बनाते हैं उनको बेचकर विद्यालय के व्यय के कुछ भाग की पूर्ति की जा सकती है।

PTEC GURWA, CHATRA, HAZARIBAG

बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम

इसमें निम्नलिखित विषयों को सम्मिलित किया गया हैः–

क. आधारभूत उद्योग निम्न में से कोई एक चुना जाता है। जैसे कृषि, कताई–बुनाई, लकड़ी के कार्य मिट्टी के कार्य चमड़े के कार्य मछलीपालन, फल एवं उद्यान कर्म। बालिकाओं के लिए गृह विज्ञान तथा अन्य कई उद्योग जो स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार अनुकूल हो।

ख. मातृभाषा।

ग. गणित।

घ. सामाजिक विज्ञान

(i) प्रकृति अध्ययन

(ii) वनस्पति शास्त्री

(iii) प्राणीशास्त्र

(iv) रासायनशास्त्र

(v) पशु विज्ञान

(vi) स्वास्थ्य का ज्ञान

(vii) नक्षत्रों का ज्ञान एवं महान वैज्ञानिको की कहानियाँ।

ड. सामाजिक अध्ययन (इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र)।

च. कलाः– रेखा चित्रण एवं संगीत।

छ. हिन्दी :– (जहाँ मातृभाषा नहीं है।)

ज. शारीरिक शिक्षा : (व्यायाम एवं खेलकूद)

अध्यापक विधि : बुनियादी शिक्षा में अध्यापन की विधि सामान्य शिक्षण पद्धति से सर्वधा भिन्न है। इसमें अध्यापन का कार्य क्रियाओं और अनुभवों के माध्यम से किया जाता है। दूसरे शब्दों मे शिक्षण विधि इतनी व्यवहारिक होती है कि बच्चे विभिन्न विषयों का ज्ञान एक ही समय में अर्जित करते है। साथ ही उन्हें वह ज्ञान अल्प समय में ही उपलब्ध हो जाता है।

प्रथम कक्षा में बच्चों को अपनी मातृभाषा का मौखिक ज्ञान कराया जाता है। उसके बाद बच्चे पढ़ना और उसके बाद लिखना सीखते हैं। जिस समय वे लिखना सीखते हैं उस समय किसी आधारभूत उद्योग की जानकारी भी प्राप्त करते है। इस प्रकार जैसे–जैसे बच्चे आगे के वर्गों में पहुँचते है वे विभिन्न विषयों के ज्ञान का अर्जन करते हैं परन्तु उनको इन विषयों की शिक्षा स्वतंत्र रूप से प्रदान न कर किसी आधारभूत उद्योग के माध्यम से दी जाती है। पाठ्यक्रम के समस्त विषय परस्पर संबंधित ज्ञान क्षेत्रों के रूप में बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किए जाते है। इस प्रकार सात वर्ष के अंत में बच्चों को सभी विषयों का पूर्णतः ज्ञान प्राप्त हो जाता है। साथ ही उन्हें आधारभूत उद्योग की इतनी अच्छी जानकारी हो जाती है कि उसकी सहायता से धनोपार्जन करने लगते हैं।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

बुनियादी शिक्षा की विशेषताएँ

क. **मनोवैज्ञानिक आधार** : **इस** शिक्षा का आधार मनोवैज्ञानिक है, क्योंकि विषय की अपेक्षा बालक का अधिक महत्व है। बालक का प्राकृतिक विकास किसी कार्य के द्वारा ही हो सकता है। इस मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर बुनियादी शिक्षा में हस्तकला को प्रमुखता दी गई है।

ख. **सामाजिक आधार** : बुनियादी शिक्षा प्रणाली का आधार सामाजिक है इसमें बालक के सामाजिक गुणों का विकास करने का प्रयास किया जाता है। उद्योग द्वारा उनमें आत्संयम, आज्ञापालन, सहयोग, सहिष्णुता आदि गुणों का विकास किया जाता है।

ग. **आर्थिक आधार** : बुनियादी शिक्षा प्रणाली का आधार आर्थिक है। इसमें दो तर्क दिए जा सकते है।

(i) विद्यालयों में छात्रों को किसी उद्योग की शिक्षा दी जाती है। उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओं को बेचकर विद्यालय और शिक्षा का व्यय यदि पूर्ण रूप से नहीं तो आंशिक रूप से आवश्य निकल आता है।

(ii) बालक उद्योग को सीखकर और उसमें प्रवीणता प्राप्त कर स्वतंत्र रूप से जीविकोपार्जन कर सकते है।

घ. **हस्तश्रम का महत्व** :बुनियादी शिक्षा में बालक हाथ से काम करने वाले व्यक्तियों को सम्मान की दृष्टि से देखते है। हमारे देश में मानसिक कार्य श्रेष्ठ और हाथ के काम को निकृष्ट समझा जाता है। इस प्रकार के विचार और भेदभाव आजकल के नए प्रजातंत्र वादी संस्थाओं की वृद्धि और विकास में बाधा डालते है। इसी बात को ध्यान में रखकर हाथ के काम को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

ड. **विद्यालय, घर और समाज के जीवन में सामन्जस्य** : वर्तमान शिक्षा प्रणाली का सर्वश्रेष्ठ दोष यह है कि उसके द्वारा विद्यालय घर और समाज के जीवन में सामन्जस्य स्थापित नहीं है। बुनियादी शिक्षा प्रणाली में यह दोष नहीं है। उद्योग की शिक्षा प्राप्त करने से बालक के व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि होती है और वह विद्यालय घर और समाज में प्रायः समान वातावरण पाता है।

च. **सह–संबंध शिक्षा** : बुनियादी शिक्षा में अपनाई गई शिक्षण विधि विशेष रूप से महत्वपूर्ण एवं आधुनिकतम है। इस विधि में बालक की समस्त शिक्षा का माध्यम कोई उद्योग अथवा क्रिया है। कृषि, कताई, बनुाई, लकड़ी, मिट्टी अथवा चमड़े के काम आदि में से बालक एक कार्य का चयन करके उसको करता है। तत्पश्चात् बालक को उस कार्य से संबंधित अन्य ज्ञान प्रदान किया जाता है।

छ. **ज्ञान एक सम्पूर्ण इकाई है**ः प्रचालित शिक्षा प्रणाली के अनुसार बालकों को जिन विभिन्न विषयां की शिक्षा दी जाती है वे प्रायः एक–दूसरे से अलग होते है। फलस्वरूप बालक जिस ज्ञान का उपार्जन करता है। वह एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में न होकर विभिन्न तथ्यों तथा नियमों का संकलन मात्र होता है। बुनियादी शिक्षा प्रणाली में सभी विषयों का ज्ञान किसी उपयोगी उद्योग के द्वारा कराया जाता है।

ज. **बालक प्रधान शिक्षा**ः बुनियादी शिक्षा बालक प्रधान है। उसका एकमात्र विषय बालक है। शिक्षा बालक के प्राप्त करनी है। अतः उसे सफल और सार्थक बनाने के लिए यह प्रयास किया जाता है। कि विद्यालय के प्रत्येक कार्य में बालक पूर्ण रूचि ले और उसमें भाग ले।

झ. **क्रिया प्रधान शिक्षा** : बुनियादी शिक्षा क्रियाप्रधान है इसके सम्पूर्ण ज्ञान का आधार अनुभव माना गया है। और इस अनुभव को प्राप्त करने का माध्यम कोई उद्योग होता है। बालक इस केन्द्र मुक्त शिक्षा में

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

सक्रिय रहते हुए और भी संबंधित अनुभवों को प्राप्त करता है। उद्योग में लगे हुए बालक बौद्धिक ज्ञान अथवा मानसिक अनुभव भी पाप्त करते है। शिक्षा में यह सिद्धांत करो और सीखों कहा जाता है।

ञ. **शिक्षा का माध्यम आधारभूत उद्योग** : बुनियादी शिक्षा का माध्यम कोई आधारभूत उद्योग सभी विषयों के अध्ययन का माध्यम होता है। आधुनिक युग के सभी शिक्षा विशेषज्ञ इस बात को स्वीकार करते है कि बालकों को किसी उत्पादक कार्य के द्वारा शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। क्योंकि इस प्रकार की शिक्षा जीवन से वास्तविक संबंध स्थापित करती है।

ट. **स्वतत्रंता प्रधान प्रणाली** : बुनियादी शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों तथा छात्रों को कार्य करने की अधिक स्वतंत्रता रहती है।

बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत

क. **सभी के लिए अनिवार्य निशुल्क शिक्षाः** बुनियादी शिक्षा का सबसे पहला सिद्धांत यही है कि देश के सभी बच्चों को एक निश्चित अवधि तक मूल प्रस्ताव के अनुसार सात वर्षों तक किन्तु बाद के निर्णय के अनुसार 8 वर्षों तक अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा दो जाय। यह सिद्धांत अंग्रेजों के शिक्षा नीति की प्रतिक्रिया के स्वरूप ही सामने आया। अंग्रेजों द्वारा हम उपेक्षित और परित्यक्त थे। उस समय शायद 10% लोग ही शिक्षित थे। हमारी दुर्व्यव्यवस्था का यही कारण था। अतः बुनियादी शिक्षा में इसे दूर करने की चेष्टा की गई।

ख. **मातृभाषा द्वारा शिक्षा** : उस समय केवल अंग्रेजी माध्यम से पढाई होती थी। अंग्रेजी जन सामान्य से अपने को अलग मानते थे इसका बुरा प्रभाव जन साधारण पर पड़ता था। इसके साथ ही भारतीय छात्र अंग्रेजी पर भी पूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं कर सकते थे। इसके मूल में उनकी अपनी सांस्कृतिक विरासत थी, फल यह होता था कि दोनों के बीच वे अटके से रहते थे। अतः बुनियादी शिक्षा ने यह सिद्धांत दिया कि मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा होनी चाहिए।

ग. **उद्योग केद्रिंत शिक्षा** : अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली केवल कलर्क या कर्मचारी ही पैदा करती थी। जीवन की व्यवहारिक आवश्यकताओं से उसका कोई संबंध नहीं था। इस शिक्षा में शारीरिक श्रम सर्वथा उपेक्षित रहने लगा और भारतीय घरेलू उद्योग का हास होने लगा। नौकरी नहीं मिलने पर बेकारी की समस्या बढ़ने लगी।

इसे दूर कर स्वावलम्बन लाने के आत्मविश्वास पैदा करने के लिए, गृह उद्योग को आश्रय देने के लिए और शारीरिक श्रम की महत्ता स्थापित करने के लिए प्रयास किया गया।

घ. **स्वाश्रायी शिक्षा** : भारतीय शिक्षा के कारण भारतीय जनता का गरीब होना जरूरी था। क्योंकि शिक्षा खर्चीली हो गई थी। अतः गाँधीजी ने कहा विद्यालयों में जो उद्योग चलायी जाए वे उत्पादक हो ताकि उससे बालकों की शिक्षा का खर्च निकल जाए और शिक्षकों को वेतन मिल जाए। गाँधीजी का यह अनुमान था कि सात साल के अंत में बालकों को इस काबिल बनाया जाए ताकि वे अपनी पढ़ाई का खर्च अदा कर सकें।

ड. **बालक प्रधान शिक्षा** : शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वागीण विकास माना गया है। अतः विद्यालय में जितनी भी क्रियाएँ होती है। सब बालकों की शक्ति, प्रवृत्ति एवं अभिरूचि के अुनसार होनी चाहिए। इस तरह बुनियादी शिक्षा में इसकी व्यवस्था की गई।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

च. **गतिशील शिक्षा** : बुनियादी शिक्षा में विभिन्न क्रियाशीलनों के संपादन में बालक प्रायः गतिशील रहते हैं और शिक्षक सदा उसकी सहायता करते है। रूचि और शक्ति का भी ध्यान रखा जाता है। परिणामतः समस्त वातावरण में गतिशीलता व्याप्त रहती है।

छ. **सहकारी शिक्षा** : अंगजी शिक्षा प्रणाली ने हम भारतीयों को स्वार्थी, लालची और ईर्ष्यालु बना दिया था। बुनियादी शिक्षा ने अपने प्रत्येक क्षेत्र में सहकारिता को अपनाया सामुहिक रूप से टोलियों में बैठकर काम करने वाले बच्चों में एक साथ मिलकर किसी वस्तु का उत्पादन कर उसे सामुहिक ढंग से उपयोग करने के लिए सहकारिता की भावना को प्रेरित किया क्योंकि बिना सहयोग और सहकारिता के कुछ नहीं हो सकता था अतः बुनियादी शिक्षा ने इसे अपनाया।

ज. **अहिंसात्मक शिक्षा** : सहकारिता के सिद्धांत पर चलने वाली बालक की रूचि प्रवृत्ति और स्वावलम्बन पर आधारित शिक्षा कभी हिंसात्मक नहीं हो सकती है। स्वावलम्बन और शारीरिक श्रम की महता देने के कारण वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष और शोषण की भावना भी समाप्त होती है। एक साथ मिलकर काम करने और उसका उपभोग करने से सहकारिता और सह अस्तित्व की भावना जागती है। वह सदा अहिंसा की ओर ही ले जाने वाली होती है। अतः बुनियादी शिक्षा इसी सिद्धांत के रूप में स्वीकार करती है।

झ. **सत्यान्वेषी (सत्य की खोज करने वाला)** :– जीवन की वास्तविकता से दूर प्रस्तरीय शिक्षा सदा सत्य से दूर रहती है। बुनियादी शिक्षा में जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में शिक्षा दी जाती है। जीवन की वास्तविक समस्याओं को सुलझाने और सामना करने की परिस्थिति और सुझाव दिए जाते है। विश्व की महान विभूतियों की जयंतियाँ मनाकर उनमें रूचि और उत्सुकता जगायी जाती है। इस प्रकार सत्य का अन्वेषण या सत्य को अपनान का प्रयास किया जाता है।

बुनियादी शिक्षा के दोष :

क. **मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधरित न होना** : कुछ विद्धानों के विचार में बुनियादी शिक्षा में बालक के मानसिक विकास से संबंधित कोमल और महत्वपूर्ण सिद्धांतों की अवहेलना की गई है। उसके महत्वपूर्ण व्यक्तित्व की अवहेलना की गई है। उसे एक उददेश्य की पूर्ति में साधन समझा गया है। वह उद्देश्य जीविका कमाना है।

ख. **समन्वय का आधार उद्योग एक अस्वभाविक कार्य है**: – किसी भी सुदृढ़ शिक्षा प्रणाली में हस्तकला द्वारा पाठ्यक्रम के सभी विषयों का संबंध स्थागित करना एक अस्वभाविक कार्य है। अध्यापन प्रभावपूर्ण होना चाहिए इसलिए इसका संबंध बालक के निजी अनुभवों से होना चाहिए अतः यह भारी भूल है कि समस्त ज्ञान का केन्द्र किसी उद्योग को रखा जाए।

ग. **आदर्श धार्मिक गुणों की अवहेलना** : हमारे राष्ट्रीय आदशों के अनुसार शिक्षा का आधार धर्म होना चाहिए और इसे धारण करना उद्देश्य होना चाहिए। उद्योग पर आधारित शिक्षा हमारे प्राचीन धार्मिक आदर्शों के विपरीत है।

घ. **औद्योगिक समय में बुनियादी शिक्षा की अनुपयुक्तता** : पंच वर्षीय योजना और सरकार समस्त नीतियाँ औद्यौगिकी करण की है। ऐसी स्थिति में बुनियादी शिक्षा के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। हमारी शिक्षा प्रणाली का एक उद्देश्य राष्ट्र का आर्थिक विकास करना है। अतः ऐसे देश में जहाँ सामुहिक आर्थिक विकास करना है। वहाँ उद्योग पर जोर देना गलत है।

ड. **हानिकारक प्रतियोगिता** : इस योजना में प्रतियोगिता द्वारा कुशल कलाकारों को हानि होगी।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

च. **बुनियादी विद्यालयों का असफल कार्य** : यांत्रिक गणित और शब्द अभ्यास की हानि हो रही है।

छ. **बालक की अवहेलना** : उद्योग की ओर अधिक ध्यान देने के कारण बालक की अवहेलना की जाती है। बुनियादी शिक्षा को एक आर्थिक कार्य का माध्यम समझा जाता है।

ज. **दूषित कार्य विवरण** : बुनियादी विद्यालयों में लगभग आधा समय विषय शिक्षण में लगता है और बाकी उद्योग को दिया जाता है। अधिकतर कार्य तालिका में शिक्षण कार्य को समय उद्योग के बाद दिया जाता है। जिसका परिणाम यह होता है। कि हस्त का कार्य सीखकर छात्र थक जाते हैं और वे शिक्षण कार्य में रूचि नहीं ले पाते है।

झ. **साहित्य और अन्य जानकारियों का बहुत कम स्थान है** : साहित्य और दूसरे महत्वपूर्ण विषयों को दूसरा स्थान दे दिया जाता है।

ञ. **किसी भी हस्तकला में निपुणता का न आना** : विद्यार्थी लगभग विद्यालय कार्य का आधा समय हस्त कला सीखने में लगाते हैं फिर भी वे किसी भी कला में निपुण नहीं होते है।

बुनियादी शिक्षा का प्रसार और अंत

1940–47 की अवधि में कई राज्यों में बुनियादी शिक्षा की पाठशालाएँ बहुत उत्साह से खोली गई और चली। 1947–60 तक भारत की स्वतंत्रता की वर्षों मे 'मौलाना आजाद' और 'कालू लाल फामिली' भारत सरकार में शिक्षा मंत्री हो उन्होंने बुनियादी शिक्षा को प्रसारित करने में बहुत अहम भूमिका निभाई। लेकिन 1960–1970 के बीच बुनियादी शिक्षा को देश के शिक्षा शास्त्रियों और नेताओं ने लगभग छोड़ दिया। 1964–66 के कोठरी आयोग ने बुनियादी शिक्षा को समाप्त कर दिया। इसे त्यागने के प्रमुख कारण थे :

क. स्वतंत्र भारत के बुद्धि जीवियों ने इसको हेय (घृणा की दृष्टि माना)।

ख. भारत नायक पूजा का देश है जब तक गाँधीजी जीवित हो सभी राष्ट्रवादी नेता उनकी पूजा करते थे। वह उनके आदर्शों पर चलते थे। 1960–70 के दशक में अधिकांश नेता व जनता गाँधी जी के विचारों, आदर्शों और रचनात्मक कार्यक्रम तथा बुनियादी शिक्षा के प्रति विमुख हो गए।

ग. अधिकांश गाँधीवादी नेताओं और शिक्षा शास्त्रियों ने अपनी संतानो को बुनियादी पाठशालाओं म पढ़ने नहीं भेजा बल्कि अंग्रेजी माध्यम के महंगे पब्लिक स्कूलों मे भेजा जैसे डॉ० जाकिर हुसैन, डॉ० के० जी० सैयदेन और असंख्य अन्य आदि।

घ. धन का अभाव सर्वत्र रहा।

ड. बुनियादी पाठशालाओं के उद्योगों को ग्रामीण, पिछड़ा हुआ माना गया।

च. नए औद्योगिक और आधुनिक युग में उनको निम्नस्तर का माना गया।

छ. गाँधीजी और गाँधीवाद के प्रति अधिकतर लोगों और नेताओं में सच्ची श्रद्धा अब नहीं रही है। वे इस योजना को ग्रामीणों और निर्धनों के लिए ही मानते है। अब भारत में आर्थिक संपन्नता सभी वर्गों में बड़ी है बहुत से लोग अपने बच्चों को पब्लिक स्कूलों में और शहरों के सरकारी स्कूलों में भेज रहे हैं।

ज. शिक्षाशास्त्रियों में बुनियादी शिक्षा के मूल सिद्धांतो को जैसे स्वावलंबन क्रिया हस्तकला तथा मातृभाषा की शिक्षा को छोड़ दिया ओर नए–नए सिद्धांतो की ओर आकृष्ट हुए।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

बुनियादी शिक्षा की आज भी आवश्यकता है

क. आज की शिक्षा के नियंत्रण और कार्यप्रणाली में मूल्यहीनता आ गई है।

ख. वैश्वीकरण, शिक्षाके निजीकरण शिक्षा में खुब कमाने की प्रवृत्ति और आजकल की इंद्रिय प्रधान संस्कृति में सभी लालची और फैशन प्रधान बन गए हैं

ग. मूल्य शिक्षा का आज सभी लोग नारा लगाते हैं। उसके महत्व को सभी सर्वोपरि मानते हैं लेकिन गाँधीजी के मूल मूल्यों, स्वराज, सत्य और सेवा को सभी ने बिल्कुल त्याग दिया है।

देश में शिक्षा और समाज में हो रहे गंभीर विघटन से मुक्ति पाने का एकमात्र इलाज अब यही है कि गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा को परिष्कृत और आधुनिक युग के अनुकूल बनाया जाकर पुनः लागू किया जाए। अन्यथा देश की अधिकांश जनता विशेषकर ग्रामीण और निर्धन पिछड़े वर्ग के लोग शिक्षा से वंचित रह जाएँगे और निकट भविष्य में भारत में सामाजिक आर्थिक अंतर बहुत बढ़ जाएगा और अशांति तथा लूट–मार फैलने का खतरा बहुत बढ़ जाएँगा। अतः केन्द्र सरकार को इस दिशा में नए कदम उठाने होंगे और बुनियादी शिक्षा के अच्छे सिद्धांतों को शिक्षा में प्रयोग करेंगे।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

सौंदर्य विषयक शिक्षा रवीन्द्रनाथ टैगोर

रवीन्द्रनाथ टैंगोर का जन्म 7 मई 1861 में बंगाल के (कोलकाता) प्रसिद्ध टैगोर वंश में हुआ। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर थे। टैगोर परिवार अपनी समृद्धि, कला, विद्या एवं संगीत के लिए संपूर्ण बंगाल में प्रसिद्ध था। उनकी माता का नाम शारदा देवी था। टैगोर अपने पिता से देश भक्ति, विद्वता, धर्म प्रियता, साधना आदि गुण उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुए वह अपने सभी भाई बहनों में सबसे छोटे थे। परन्तु उन्होंने अपने यश से न केवल टैगोर परिवार वरन् सम्पूर्ण देश को गौरव प्रदान किया।

टैगोर को सर्वप्रथम 'ओरियन्टल सेमेनरी स्कूल में भर्ती किया गया, परन्तु उनका वहाँ मन नहीं लगा इस कारण उनको कुछ महिनों के बाद साधारण विद्यालय में दाखिला दिलाया गया। इस विद्यालय में उन्हें कुछ कटु अनुभव प्राप्त हुए जिनके परिणाम स्वरूप आगे चलकर उन्होंने शिक्षा सुधार के लिए प्रयास किया और आदर्श शिक्षा संस्था के रूप में 'शांति निकेतन' की स्थापना की जो कि आज 'विश्वभारती' विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है।

वस्तुतः उनकी प्रारंभिक शिक्षा विद्यालय से अधिक घर पर हुई थी संस्कृत बंगला, अंग्रेजी, चित्रकला, संगीत आदि की शिक्षा घर पर देने के लिए अलग–अलग शिक्षक नियुक्त किए गए। 1878 ई० में टैगोर अपने भाई के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड गए वहाँ उनको ब्राइटन विद्यालय में दाखिला दिलाया गया। परन्तु टैगोर इस विद्यालय में भी अधिक दिन तक न रहे वहाँ से वे लंदन चले गए। वहाँ उन्होंने किसी विद्यालय में प्रवेश नहीं लिया। अतः 1880 ई० में वे स्वदेश लौट आए। उन्हें विद्यालय की शिक्षा के नाम पर कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। 1881 ई० में टैगोर पुनः इंग्लैंड गए और अब की बार कानून की शिक्षा प्राप्त करने गए थे। इंग्लैंड पहुँचने पर उनका विचार बदल गया और कानून की शिक्षा प्राप्त करने का विचार त्याग दिया। इसके परिणाम स्वरूप वे पुनः भारत लौट आए।

1901 ई० मे टैगोर ने गोलपुर के समीप शांति निकेतन की स्थापना की तथा उन्होंने शिक्षा साहित्य व समाज की सेवा स्वयं एक अध्यापक के रूप मे कार्य किया यह विद्यालय उदारता एवं विभिन्न सांस्कृतियों के संगम स्थल के रूप में दिन–प्रतिदिन उन्नति करता गया। आज इसको भारत के विश्वविद्यालयों में अद्वितीय स्थान प्राप्त है।

उन्होंने राजनीति में भी सफलता पूर्वक प्रवेश किया और सन् 1919 ई० तक वे राजनीतिक कार्यों में रूचि लेते रहे परन्तु वे इस क्षेत्र मे होते हुए भी साहित्य की सेवा अनवरत् रूप से करते रहे महान कवि एवं साहित्यकार के रूप में उनका व्यक्तित्व निखरता गया। टैगोर विश्व कवि थे और गीतांजली उनका विश्वविख्यात ग्रंथ है। गीतांजली टैगोर की वह अमर कृति है जिसने उन्हे देश–विदेश में महाकवि के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। 1913 ई० में उनको गीतांजली पर नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

1920–30 तक उन्होंने यूरोप, अमेरिका तथा एशिया के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया। उन्होंने वहाँ विभिन्न स्थानों में रजन दिए। सन् 1941 ई० में इस महान साहित्यकार, शिक्षा शास्त्री, महान कवि टैगोर का देहांत हो गया।

टैगोर के शिक्षा दर्शनः

टैगोर शिक्षा शास्त्री के रूप में अपने स्वयं के प्रयास से प्रकट हुए यह उनके जीवन मे अनुभव का आवश्यक परिणाम था। उनका संबंध ऐसे प्रकार से था जो सब प्रकार के गतिशील विचारो, कार्यों तथा विभिन्न सामाजिक ओर सांस्कृतिक आंदोलनों का केन्द्र था। उनके परिवार के सदस्यों में प्रायः सभी अच्छी बातों के जानकार थे। जैसे दर्शन, कविता व कला, संगीत, नाटक, राष्ट्र निर्माण, समाज सुधार, व्यापार व्यवसाय ओर आध्यात्मिक अनुभव। टैगोर में ऐसी तीव्र और विविधत् ग्रहण शक्ति थी कि उन्होंने इन सभी बातों को बड़ी सरलता से ग्रहण करके अपना लिया।

उपर्युक्त गुणों के साथ–साथ टैगोर में और भी ऐसे अनेक गुण थे जिन्होंने उनको अति महान शिक्षा शास्त्री बना दिया। उनकी बुद्धि इतनी तेज थी कि वे बड़ी सरलता से किसी भी ज्ञान को अपना बना सकते थे। उन्हें विज्ञानों और मानव शास्त्रों का बहुत ज्ञान था।

उनकी अपेक्षा जाँन डीवी को अधिक बातों में रूचि थी पर उसमें टैगोर के समान कलात्मक विषयों में रूचि नहीं थी। जैसे कविता, उच्च कोटि का दर्शन, संगीत की अक्षम बातें और कलाएँ।

रूसों और फ्रोबल के समान टैगोर प्रकृति की शक्ति और गुणों को मानते थे। पर प्रकृति से संपर्क रखने और इस संपर्क के कारण शिक्षा पर उसके प्रभाव को उसने रूसों और फ्रोबेल के बजाय कहीं अच्छी तरह समझा।

टैगोर के शिक्षा के उद्देश्य

टैगोर द्वारा निर्धारित किए जाने वाले शिक्षा के मुख्य उद्देश्य थेः–

क. मुक्ति दिलाना : रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य समस्त बंधनों से छुटकारा दिलाना था। वह न केवल सांसारिक बंधनों से मुक्ति दिलाना चाहते थे वरन् शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा राजनीतिक सभी प्रकार की दासता से मुक्ति दिलाना चाहते थे।

ख. शिक्षा का उद्देश्य पूर्णता प्राप्त करना : शिक्षा का उद्देश्य था एक पूर्ण मनुष्य का निर्माण करना। उनके अनुसार शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा तीनों का विकास शिक्षा द्वारा होना चाहिए। इसके लिए बालक को स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। टैगोर के इस उद्देश्य का तात्पर्य था कि बालक में

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

इतना ज्ञान पैदा करना जिससे वह अज्ञानता के अंधकार को दूर कर सके, उन्होनें ज्ञान का अर्थ विद्धता प्राप्त करने से नहीं लगाया है बल्कि ऐसी सच्ची बुद्धिमता से लगाया जिसकी अभिव्यक्ति क्रिया के द्वारा और सहानुभूति के रूप में होगी।

ग. **सत्य की एकता का ज्ञान प्राप्त करना** : टैगोर के अनुसार सत्य की एकता का उद्देश्य तभी प्राप्त किया जा सकता है। जब भौतिक, आध्यात्मिक पहलूओं को अलग–अलग न माना जाय इनमें समन्वय स्थापित किया जाए। उनका मानना है कि ईश्वर ने प्रकृति तथा मनुष्य दोनों की रचना की है। दोनों से घनिष्ट संबंध है, दोनों एक ही इकाई हैं, इन्हें अलग–अलग नहीं देखा जा सकता। यह उनका पूर्णता का सिद्धांत था।

घ. **नैतिकता का विकास** : टैगोर के अनुसार जब तक व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का सृजन नहीं होगा, तब तक विश्व में शांति स्थापित नही हो सकती है। भौतिक शक्ति अशांति और युद्ध का रास्ता दिखाती है। मनुष्य विज्ञान का प्रयोग तभी उचित दिशा में कर सकता है। जब उसमें बुद्धि, विवेक और नैतिकता हो।

ड. **विश्व में एकता स्थापित करना** : रवीन्द्रनाथ टैगोर ने यह अनुभव किया कि भारत में अंग्रेजी सरकार द्वारा जो शिक्षा प्रचलित थी उसके द्वारा विश्व में एकता स्थापित नहीं किया जा सकता इस अनुभव का प्रयोग उन्होंने विश्व भारती में किया है। उनके अनुसार ''विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का समन्वय होना चाहिए।'' सभी देश को चाहिए कि इसके लिए आदान–प्रदान का रास्ता खोले वे छात्रों को इस प्रकार से शिक्षित करना चाहते थे। जिससे देश विदेश का भेद–भाव दूर हो। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपने विश्वविद्यालय का नाम विश्वभारती रखा।

शिक्षण विधियाँ

क. **यर्थाथता पर आधारित शिक्षण विधि** : टैगोर के अनुसार शिक्षण विधियाँ अस्वभाविक नहीं होनी चाहिए बल्कि यथार्थ और वास्तविक परिस्थितियों पर आधारित हो। सभी विषयों को बंद कमरे में पढ़ाना उचित नहीं है। प्रकृति–विज्ञानों का अध्ययन प्रकृति के निरीक्षण से तथा सामजिक विज्ञानों का अध्ययन वास्ताविक सामाजिक परिस्थितियों तथा समस्याओं के संपर्क में लाकर कराया जाय। इसी प्रकार अन्य विषयों की शिक्षा भी सजीव वातावरण में बालकों को प्रदान की जाय।

ख. **पूर्ण विधि** : रवीन्द्रनाथ टैगोर मनोवैज्ञानिकों की तरह सीखने की पूर्ण विधि में विश्वास करते थे। वे कहते है, ''बाल्यावस्था में हम अपने पाठों को पूरे शरीर और मस्तिष्क की सहायता से सीखते हैं हमारी सभी ज्ञाननेद्रियाँ पूरी तरह से समर्थ और सक्रिय रहती है। जब हम स्कूल भेजे जाते हैं तो प्राकृतिक सूचनाओं का द्वार बंद हो जाता है। हमारी आँखे अक्षरों को देखती है और कानों को पाठों की सूची सुनाई पड़ती है। अतः टैगोर जी कहते है कि हमारी आँखे स्वभाविक रूप से किसी

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

विषयवस्तु को देखती है। यदि प्रारंभ में पूरा मस्तिष्क कार्य नहीं करता तो उसमें क्षमता कभी विकसित नहीं हो पाएगी अतः टैगोर का सिद्धांत पूर्णता पर आधारित है।

ग. **भ्रमण द्वारा सीखना** : टैगोर ने भ्रमण द्वारा सीखने पर बल दिया है। उनका कहना था कि वस्तुओं की सीधे संपर्क से ज्ञान प्राप्त करना सरल है। अतः टैगोर के अनुसार इस विधि से सीखने में गति, प्रेरणा तथा रूचि उत्पन्न होती है। अतः भ्रमण के समय पढ़ाना शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है।

घ. **क्रियाशील विधि** : टैगोर क्रियाशील शिक्षा विधि के समर्थक थे। उनके अनुसार कक्षा–काल म बच्चों को उछलने, भागने, पेड़ पर चढ़ने, कुत्ता या बिल्ली के पीछे दौड़ने, फल तोड़ने, हँसने, चिल्लाने, ताली बजाने, अभिनय करने को शिक्षण की आवश्यक विधि माना है। इसी उद्देश्य से टैगोर ने नृत्य, नाटक, संगीत आदि की अनिवार्यता पर बल दिया।

ड. **वाद–विवाद एवं पश्नोत्तर विधि** : टैगोर वाद–विवाद तथा प्रश्नोत्तर विधि को महत्व देते थे। उनके अनुसार छात्रों के सामने दैनिक जीवन की समस्याएँ रखी जाएँ। इससे उनमें सूझ एवं तर्क उत्पन्न होता है। पुस्तकों पर आधारित शिक्षण अरूचिकर तथा अव्यावहारिक होता है।

शांति निकेतन या विश्व भारती

शांति निकेतन कोलकाता से उत्तर पश्चिम की ओर लगभग 100 मील दूर है।यह स्थान बर्दवान साहेबगंज लूपलाइन पर बोलपुर स्टेशन से 1 ½ मील दूर है। शांति निकेतन की स्थापना गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ने की थी। महर्षि देवेन्द्रनाथ जी ब्रह्य समाजी थी और अपनी साधना के लिए एक शांत स्थान की खोज में थे। यह स्थान उस समय ऊसर (अनुपजाऊ) था। और इसका चुनाव करने के बाद उन्होंने इस स्थान पर अनेक वृक्ष लगाए। आज इस स्थान पर आम्रकुन्जों की छटा निराली हैं और चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। इस स्थान पर आपार शांति मिलती है इसलिए इसका नाम शांति निकेतन रखा गया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर जब 11 वर्ष के थे तो सर्वप्रथम अपने पिता के साथ शांति निकेतन गए। अपने प्रथम अनुभूति के विषय में उन्होंने लिखा है कि यदि मुझे बाल्याकाल में वह सुअवसर नहीं मिलता तो मेरा जीवन नितांत असम्पूर्ण सा रह जाता। शांति निकेतन की प्राकृतिक छवि ने बालक रवीन्द्र का ध्यान अत्यधिक आकृष्ट कर लिया था।

टैगोर अपनी जमींदारी की देखभाल के लिए गाँवों में जाते तो ग्रामीणों के दुःख दर्द सुनते और उनकी पीड़ा की स्वयं अनुभूति करते। अज्ञानता के जाल मे जकड़े हुए मानवता को देखकर टैगोर का हृदय व्याकुल हो उठा और वे कुछ करने के लिए छटपटाने लगे। सन् 1901 में उन्होंने शांति निकेतन की नींव रख दी। उस समय केवल 5 छात्र थे।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

गुरूदेव टैगोर ने अब अपना ध्यान शिक्षा में सुधार की ओर लगाया। वे प्राचीन गुरूकुल प्रणाली की विशेषताओं की ओर आकृष्ट थे और वर्तमान वैज्ञानिक प्रगति से उसका समन्वय करना चाहते थे। उन्होंने अपने विद्यालय में विद्यार्थी को पूर्ण स्वतंत्रता दी। उनका विचार था कि छात्र को वही काम करने को कहा जाय जिसमें उसे आनन्द आए। जब तक छात्र अपनी इच्छा से कार्य नहीं करता तब तक उसे आनन्द नहीं मिलता अध्यापक का कार्य केवल प्रेरणा देना होना चाहिए। प्रकृति के बीच में स्थापित शांति निकेतन विद्यालय में वे अपने विचारों को मूर्त्त रूप देने लगे। गुरू का निर्देश पाते ही छात्र वृक्ष के नीचे, वृक्ष की शाखा पर या आम्रकुंज में अपनी इच्छानुसार पढ़ाई करना। गुरू और शिष्य वहाँ एक परिवार की तरह रह रहे थे।

पाँच छात्रों से संख्या बढ़ते–बढ़ते हजारों तक पहुँच गई। अतः आर्थिक समस्या भी बढ़ती गई। गुरूदेव के सामने भी आर्थिक संकट से होकर विद्यालय गुजरा। गुरूदेव ने समय–समय पर विद्यालय की सहायता के लिए विभिन्न उपाय किए। उन्होंने इसके लिए तन–मन, धन सबकुछ समर्पित किया। अपनी जमींदारी से होनेवाली आय को विश्विद्यालय के विकास के लिए लगाया। इतना ही नहीं नोवेल पुरस्कार से प्राप्त धन राशि को भी इसी में लगा दिया। इस समपर्ण के कारण उन्हें समाज का भरपूर सहयोग मिला। उन्होंने विदेशो की यात्रा की और शांति निकेतन के प्रति समाज की सहानुभूति अर्जित की।

अब उनका ध्यान उच्च शिक्षा की ओर गया। उच्च शिक्षा को वे आध्यात्मिक शक्ति का साधन मानते थे। विश्व–विद्यालयों की मांत्रिकता से उन्हें गलानि थी। वे विश्वविद्यालयों को ज्ञान केन्द्र बनाना चाहते थे। अतः उन्होंने 6 मई सन् 1922 को शांतिनिकेतन में ही विश्व भारती की स्थापना की। इसके लिए उन्होंने तीन लक्ष्यों को सामने रखा :–

क. पूर्व एवं पश्चिम की संस्कृतियों में अंतः परस्पर संबंध स्थापित करना और विश्व बंधुत्व को बढ़ावा देना।

ख. सुखी एवं समृद्ध ग्रामीण जीवन का विकास करना।

ग. व्यक्ति के पूर्ण जीवन का विकास करना जिसमें सभी प्रकार का विकास सम्मिलित हो। जैसे– बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक आदि।

विश्व भारती की स्थापना द्वारा टैगोर मानवीय ज्ञान की ज्योति जगाना चाहते थे। विभिन्न स्रोतों से ज्ञान प्राप्त करना, मनुष्य के मन का अध्ययन करना, एक–दूसरे का सहयोग बढ़ाना, पारस्परिक जानकारी प्राप्त करना एवं पूर्वी एवं पश्चिमी सांस्कृतियों में सम्बन्ध स्थापित करना। विश्व भारती में छात्रों एवं शिक्षकों के प्रमुख कार्य थे।

विश्व भारती में सहशिक्षा है। छात्रों एवं छात्राओं के रहने की व्यवस्था वहीं पर है। जाति, साम्प्रदाय, रंग–रूप के आधार पर कोई भेद नहीं है। सभी की मानव के रूप में देखा जाता है। भारतीय संसद ने इसे 1951 में अपने 29वें अधिनियम द्वारा विश्व भारती को एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता प्रदान की

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

है। तब से यह एक सावास विश्वविद्यालय के रूप में कार्य कर रहा है, जिसमें देश–विदेश से अनेक छात्र उच्च अध्ययन प्राप्त कर रहें है।

विश्वभारती में एक विशाल पुस्तकालय है, जिसमें विभिन्न भाषाओं की लगभग 2 लाख पुस्तकें है। टैगोर के जीवन तथा उनके कृतियों के अध्ययन की सुविधा के लिए एक रवीन्द्र सदन की स्थापना 1942 में की गई है। जो टैगोर स्मारक संग्राहालय के रूप में है। और इसमें टैगोर द्वारा लिखित सभी पुस्तके, संपादित, पत्र–पत्रिकाएँ एवं अन्य सामग्रियाँ हैं टैगोर के विषय में जो कुछ लिखा गया है उनके पत्र और उनके नाम पत्र, उनकी पाण्डुलिपियाँ तथा सन् 1912 से समाचार पत्रों की टैगोर विषयक सूचनाओं की कतरने भी संग्रहित है। टैगोर द्वारा गाये गये गीतों के ध्वनि रिकोर्ड उनके द्वारा बनाए गए चित्र टैगोर के विभिन्न चित्र तथा टैगोर की व्यक्तिगत साज–सज्जा एवं उनके व्यक्तिगत सामान भी रवीन्द्र सदन में सुरक्षित है।

विश्व भारती में अनेक विभाग है। जिन्हें भवन कहा जाता है। जिनमें पहला है।

क. **पाठ भवन** : यह विद्यालय विभाग है, यहाँ मैट्रिक तक की शिक्षा का प्रबंध है। शिक्षा का माध्यम बंगला है।

ख. **शिक्षा भवन** : इस विभाग में इंटर तक की शिक्षा की व्यवस्था है। इसमें बांग्ला, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, तर्कशास्त्र, राजनीतिक, इतिहास, अर्थशास्त्र, गणित और भूगोल के शिक्षण का प्रबंध है।

ग. **विद्या भवन** : इसमें स्नातक, स्नातकोत्तर का तीन वर्ष का पाठ्यक्रम दो वर्ष का स्नातकोत्तर (M.A) और (P.HD) के लिए शोध की व्यवस्था है।

घ. **विनय भवन** : यह शिक्षक प्रशिक्षण विभाग है। इसमें B.Ed, M.Ed एवं शिक्षाशास्त्र P.Hd की व्यवस्था है।

ड. **कला भवन** : इसमें कला और शिल्प का दो वर्ष का कोर्स है। मैट्रिक के बाद 4 वर्ष का डिप्लोमा कोर्स, दो वर्षीय सर्टीफिकेट कोर्स में केवल महिलाओं का प्रवेश। (इस भवन में अपना संग्रहालय, पुस्तकालय एवं एक बड़ा हॉल है)।

च. **संगीत भवन** : यह संगीत और नृत्य विभाग है, इसमें विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम की व्यवस्था है।

छ. **चीन भवन** : इसमें चीन के साहित्य और संस्कृति की शिक्षा दी जाती है। इस विभाग में चीनी भाषा का विशाल पुस्तकालय है। साथ ही चीनियों को भारत के संबंध एवं भारतीयों को चीनियों के संबंध जानकारी की व्यवस्था है।

ज. **हिन्दी भवन** : इसमें हिन्दी भाषा और साहित्य के शिक्षण की व्यवस्था है।

झ. **श्री निकेतन** : इस विभाग में ग्रामीण उद्योग धंधों की व्यवस्था है। साथ ही ग्रामीण जीवन की समस्याओं और उसके समाधान के उपाय के अध्ययन की व्यवस्था है।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG

ञ. **शिल्प भवन** : इसमें कुटीर उद्योग की शिक्षा दी जाती है। इसमें विभिन्न प्रकार के उद्योग के पाठ्यक्रम है। शांति निकेतन राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण रहा है। इस विश्व विद्यालय में भारतीय संस्कृति और आधुनिक ज्ञान–विज्ञानों का समन्वय है। व्यक्तिगत विकास और सामाजिक विकास दोनों का प्रयास किया जाता है। विदेशों से बहुत से शिक्षक और विद्यार्थी आते रहते हैं। यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर का विश्वविद्यालय है। यहाँ टैगोर के आदर्श व्यक्तित्व एवं उनके विचारों की छाप आज भी स्पष्टतया दिखाई देती है।

यहाँ की शिक्षा में, आनन्द सहयोग सृजनात्मकता आदि देखी जा सकती है।

PTEC GURWA, SITAGARHA, HAZARIBAG